पुस्तकालय

[illegible]ल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वर्ग संख्या 69/208 आगत संख्या 38,8-8-2

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30 वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए अन्यथा 50 पैसे प्रति दिन के हिसाब से विलम्ब दण्ड लगेगा।

॥ राजरसनामृत ॥

मुंशी देवीप्रसाद ।

॥ श्रीः ॥

राजरसनामृत ।

पहला भाग।

जिसमें

राजपूतानेके नरेश कवियोंकी कविता

और

संक्षिप्त जीवनी है ।

कायस्थकुलोद्भव

मुन्शी देवीप्रसाद मुन्सिफ

जोधपुर निवासी

लिखित ।

कलकत्ता ।

९७ मुक्तारामबाबूस्ट्रीट, "भारतमित्र" प्रेसमें

पण्डित कृष्णानन्द शर्म्मा द्वारा

मुद्रित और प्रकाशित ।

सन १९०६ ई० ।



श्रीमान् महाराव राजा रघुवीरसिंहजी
बूंदी नरेश।

॥ श्रीः ॥

भूमिका ।

फारसी इतिहासों और मुसलमान कवियोंकी लिखी जीवनियों में मुसलमान नरेशोंकी काव्यकुशलता और विद्यानुरागकी बातें पढ़कर सोचा करता कि हमारे हिन्दू राजा महाराजोंके काव्य और इतिवृत्त भी कहीं मिलते तो एकत्र करके पुस्तकाकार छपवाता। या कोई बना बनाया ग्रन्थही ऐसा मिल जाता जिससे राजाओंके रसनामृत पान करनेका अवसर मिलता तो परितृप्त होता। बहुत खोज की, कविता और इतिहासके ग्रन्थ भी बहुत पढ़े, पर मनोरथ सिद्ध न हुआ। कहीं किसी नृपतिकी कविता मिली तो जीवन वृत्तान्त न मिला और किसी नरेशके कवि होनेकी बातका पता लगा तो उसकी कविता न मिली। इससे पुस्तकोंका भरोसा छोड़कर चिट्ठी पत्रीसे काम लिया। सुयोग्य सज्जनों और मित्रोंसे पत्र व्यवहार आरम्भ किया। कवि राजाओंका हाल जानने के लिये उन्हें खूब सताया। उन्होंने भी मित्रताका निर्वाह किया। मैंने जो कुछ पूछा उन्होंने उसका यथासाध्य ठीक उत्तर दिया। मैं उन मित्रोंका बहुत कृतज्ञ हूं। ग्रन्थकी समाप्ति पर उन सज्जनोंका परिचय दिया जायगा।

गुणग्राही उदारचित्त नरेशोंमेंसे उत्तम श्रेणीकी सहायता श्रीमान् बून्दीनरेश महाराव राजा श्री१०८ रघुवीरसिंहजी धीरवीर के हुजूरसे प्राप्त हुई। आपने अपने पिता, पितामह और प्रपितामहके पिताकी कविता संक्षिप्त जीवनचरित सहित अपने सरस्वती भाण्डारसे अपने कवि राव गुलाबसिंहजी द्वारा प्रदान करके मेरे इस संग्रहकी शोभा बढ़ाई। श्रीमान्‌की कृपाका कहांतक धन्यवाद किया जाय जो इस समयही नहीं चिरकालसे मुझपर चली आती

है। श्रीमान्‌के पूज्यपिता महाराज रामसिंहजी मेरे बड़े आश्रय-दाता थे। एक छोटीसी पुस्तक "नौशेरवां नीतिसुधा"के निवेदन करनेमें मुझे बड़ा सम्मान दिया था। इससे उचित समझा कि यह "राजरसनामृत" ग्रन्थ भी इन्हीं गुणग्राही श्रीमान्‌के करकमलमें अर्पण किया जाय। क्योंकि जो आभूषण उत्तम गुणसम्पन्न नृपति-गणके मुखारविन्दोंसे निकले हुए बचन रूपी रत्नोंसे सुशोभित है उसका पात्र कोई और नहीं होसकता—

रतनजटित कञ्चन मुकुट कलगी क्रीट समेत।
सुन्दर सिर रघुबीर बिन अन्त न सोभा देत॥

भाद्रपद शुक्ला १
सं० १९६२।

देवीप्रसाद,
जोधपुर।

॥ श्रीः ॥

राजरसनामृतका

सूचीपत्र ।

पहली धारा—जैसलमेर ।

पृष्ठ १ से ७ तक ।

दूसरी धारा—उदयपुर ।

पृष्ठ ८ से २५ तक ।

तीसरी धारा—जयपुर ।

२६ से ३३ तक ।

चौथी धारा - बीकानेर।

३४ से ५० तक।

पांचवीं धारा—कृष्णगढ़।

५१ से ६६ तक।

छठी धारा—बूंदी।

६७ से ८८ तक।

राजरसनामृतका यह पहला प्रवाह है। अभी इसके और भी कई प्रवाह होंगे। एक किताब और लिखी है जिसका नाम महिलामृदुवाणी है जो इससे पहले छपकर प्रकाशित होचुकी है उसमें स्त्रियोंकी कविता और उनकी संक्षिप्त जीवनी है। उसमें १२ रानियोंकी भी कविता और जीवनी है। उनके नाम यह हैं—

१—चांपादे रानी ; जैसलमेरके रावल हरराजकी बेटी ; जाति भाटी राजपूत ; बीकानेरके महाराज पृथ्वीराजकी स्त्री। सं० १६५०

२—छत्रकुंवर बाई ; कृष्णगढ़के महाराज सरदारसिंहकी बेटी ; जाति राठौड़ राजपूत ; रूपनगरके महाराजा बहादुरसिंहजी खीची राघोगढ़की स्त्री। सं० १८४५।

३—जामसुता जाड़ेची प्रतापबा ; गुजरात—जामनगरके जाम बीभाजी की बेटी ; जाति जाड़ेचा राजपूत ; जोधपुरके महाराज श्री तख्तसिंहजीकी स्त्री। विद्यमान हैं।

४—प्रतापकुंवररानी ; मारवाड़स्थित जाखण गांवके गोयनदास की बेटी ; जाति भाटी राजपूत ; जोधपुरके महाराज मानसिंहकी स्त्री। सं० १९४९ में मृत्यु।

५—मीराबाई ; मारवाड़—मेड़ताके रत्नसिंहकी बेटी ; जाति राठौड़ मेड़तिया ; चित्तौड़के महाराणा सांगाजीके कुंवर भोजराज की स्त्री। सं० १६०३ में मृत्यु।

६—रणछोरकुंवर (रानी) ; रीवाके बलभद्रसिंहकी बेटी ; जाति बाघेला राजपूत ; जोधपुरके महाराज श्रीतख्तसिंहकी स्त्री। विद्यमान हैं।

७—रत्नकुंवरिबाई (महारानी ईडर) ; मारवाड़—जाखण गांव के लक्ष्मणसिंहकी लड़की ; जाति भाटी ; जोधपुरके महाराज प्रतापसिंह ईडरनरेशकी स्त्री। विद्यमान हैं।

८—रसिकविहारी बनीठनीजी ; रूपनगर तथा वृन्दावनके महाराज नागरीदासजीकी स्त्री। सं० १८२२ में मृत्यु।

९—रानी राड़धड़ीजी ; जाति राठौड़ ; स्थान सिरोही। संवत् १६५०के लगभग थीं।

१०—विष्णुप्रसादकुंवरि ; रीवानरेश महाराज रघुराजसिंहकी बेटी ; जाति बाघेला ; जोधपुरके महाराज श्रीकिशोरसिंहकी स्त्री। विद्यमान हैं।

११—ब्रजदासी रानी बांकावतजी ; जयपुर—लिवाणके राजा आनन्दराम की बेटी; जाति कछवाहा बांकावत ; कृष्णगढ़के महाराज राजसिंहकी स्त्री। १७७६ में थीं।

१२—सुन्दरकुंवरिबाई ; कृष्णगढ़के महाराज राजसिंहकी बेटी; जाति राठौड़ ; रूपनगरके महाराज बलवन्तसिंह खीची राघोगढ़ की स्त्री। १७९१ में जन्म।

१३—हरीजी रानी ; गुजरातकी पैदाइश ; जाति ; घावड़ा ; जोधपुरके महाराज मानसिंहकी स्त्री। १८७६ में मृत्यु।

॥ श्रो: ॥

राजरसनामृत ।

पहला भाग ।

पहली धारा ।

जैसलमेर ।

जैसलमेरके राजवंशमें भाषाकविताका अनुराग भाटीदेवराजजी के समयसे चला आता है। इस राजवंशके प्राचीन इतिहासोंसे जाना जाता है कि इस जङ्गल और निर्जल देशमें रहकर भी यह भाटीकुल कविताका बड़ा आदर करता था। इसकी गुणग्राहकतासे दूर दूरके कवि और पण्डित वहां आकर अपनी मधुर रसनाका रस इस शुष्कभूमिमें सींचते थे। इस विषयमें सविस्तर वृत्तान्त पण्डितवर शास्त्री सूर्य्यकरण(१)जीके पत्रसे भलीभांति ज्ञात होता है जो इसी पुस्तकके प्रसंगमें लिखापढ़ी करनेके समय आया है। उसको यहां स्थान दिया जाता है—

"श्रीयुत महामहिम शिवदानसिंहदेव(२)जूकी आज्ञानुसार कुछ जैसलमेरु राज्यके कवि लोकोंका और महारावल साहबानका कि जो स्वयं कवि थे और गुणियोंके गाहक थे कुछ संचिप्त वृत्तान्त लिखता हूं।

---

(१) यह व्यास धनकरणजीके पुत्र हैं जो जोधपुरकी एजण्टीमें हिन्दी मुंशी थे। इनका घर जैसलमेरमें है अच्छे विद्वान हैं कोतवाली आदि राज्यके कई काम कर चुके हैं।

(२) यह राजकुमार राज्यकार्य्यमें कुशल हैं। महारावल बैरी-

जैसलदेवजीके भाई(३) भोजदेवजी स्वयं कवि थे और उनके अनन्तर जो जो राजा इस राज्यके सिंहासनारूढ़ हुए उन सबने डिंगल भाषाके कवि लोकोंको बहुत आश्रय दिया। उनके बनाये मरु भाषाके गीत दोहे छन्द बहुतसे उपलब्ध होते हैं। परन्तु महारावल भीमदेव, अमरसिंह मनहरदास, दुर्जनशाल, हरराजजी और मूलराजदेवने संस्कृत और प्राकृत ब्रजभाषाके साहित्यको बहुत कुछ उत्तेजन प्रदान किया और उनमें कितनेक स्वयं भी कवि थे। सो उनके समयमें कवि लोकोंने बहुत ग्रन्थ रचे हैं जैसे सांदू कुम्भकरण चारण कविने कई चित्ताकर्षक गीत व निबन्ध लिखे हैं और मूलराजजीने और गजसिंहजीने अपने पण्डितोंसे अनुपम संस्कृत ग्रन्थ बनवाये हैं और ब्रजभाषामें तो ऐसी कविता उनके सभासद कवियोंने की है कि ब्रजभाषावालोंको भी मात कर दिया है। केशवकी कविताकी समकक्षता तक अपने प्रबन्धोंको पहुंचा दिया है। उन सब पण्डितोंमें व्यास श्रीनाथ शर्मा षट्शास्त्री संस्कृत और ब्रजभाषाके अद्वितीय विद्वान और कवि थे जिन्होंने मूलविलास, मूलराजकाव्य, अन्योक्तिमंजूषा और वैद्यकमें लोलिम्ब-राज छन्दोबद्धभाषा प्रभृति बहुत ग्रन्थ बनाये हैं। चारण कवि लोकोंने लक्ष्मीकीर्तिसंवाद और कई प्रवाड़े अर्थात् युद्धोंके वर्णन के खण्डकाव्य लिखे हैं। महारावल गजसिंहके समय साहिबदान चारण कविने गुणरूपक नामक वीररसकी कविताका एक हृदय-ग्राही ग्रन्थ मरुभाषामें निर्माण किया है—और महारावल श्रीयुत

शालने इनको गोद लेलिया था। पर उनके पीछे लोगोंने इनके रईस होनेमें अपना हित न देखकर रानियोंको बहका दिया। उन्होंने इनको नामंजूर करके इनके बालक भतीजे रावल शालिबाहनसिंहजीको गद्दी पर बिठा दिया। यह अब अदालतका काम करते हैं। मेरे स्नेही हैं जिससे मैंने इनको लिखा और इन्होंने शास्त्रीजीको कहा तो यह पत्र आया।

(३) वंशावलीमें भतीजा लिखा है।

रणजीतसिंहजीके राज्यकालमें उनके आश्रित कवि एकतैलङ्ग भट्टने रणजीतरत्नमाला नामका ग्रन्थ वैद्यक और कवितामें उपयोगी और सरस लिखा है। महारावल बैरीशालजी भूतपूर्व्व जैसलमेराधीश स्वयं कवि और कवि चारणोंके जो डिंगल मरुभाषामें गीत निर्माण करते हैं—आश्रयदाता और मरुवाणीके रसज्ञ थे। बहुत गीत कवित्त उनके समयके बने हुऐ विद्यमान हैं जो मरुभाषा जाननेवालोंको बहुत आनन्द देते हैं और प्राचीन मरुकवियोंके काव्यसे स्पर्द्धा करते हैं। संस्कृतके कवि भारतमार्तण्ड गट्टूलाल जीने भी उनके वर्णनमें श्लोक निर्माण किये हैं। इन सब ग्रन्थोंका सविस्तर वर्णन और राजाओंके जीवनचरित्र और इतिवृत्त स्वल्प-कालमें नहीं लिख सकते हैं।

यदि आपको विलम्ब सह्य हो और यह सब ग्रन्थ जो राज्यके पुस्तकालयमें हैं मुझको दिखाये जावें तो मैं लिख सकताहूं क्योंकि भूतपूर्व महारावल बैरीशाल देव मुझ पर बहुत अनुग्रह रखते थे। उन्होंने मुझको पहले सब ग्रन्थ दिखाये हैं। इससे मैंने अपनी स्मृति से कुछ वृत्तान्त लिखा है। अब वह ग्रन्थ राज्यके अधीन हैं और मिल नहीं सकते हैं इसलिये लिखनेमें त्रुटि रहती है और सन्तोष-जनक आद्योपान्त नहीं लिख सकता हूं सो क्षमा करें। इत्यलं लि० शास्त्री सूर्यकरण धनरूपात्मज।”

रावलदेवजीसे लेकर इस समय तककी वंशावली भी यहां लिखी जाती है। पाठकोंको कोई शंका उपजे तो इसमें देखलें।

१ देवराजजी	२ मधजी	३ वाछूजी	४ दुसाजजीरावल
५ लांझाविजयरावजी	६ भोजदेजी	७ जैसलजी	८ शालिवाहनजी
९ विझलदेवजी	१० काहनजी	११ चाचगदेजी	१२ करणजी
१३ लखणसेनजी	१४ पुनपालदेजी	१५ जैतसीजी	१६ मूलराजजी
१७ दूदोजी	१८ घड़सीजी	१९ केहरजी	२० लखमणजी
२१ वैरसीजी	२२ चाचूजी	२३ देवीदासजी	२४ जैतसीजी
२५ करमसीजी	२६ लूणकरणजी	२७ मालदेजी	२८ हरराजजी

२८ भीमजी ३० कल्याणदासजी ३१ मनोहरदासजी
३२ रामचन्द्रजी ३३ सबलसिंहजी ३४ अमरसिंहजी
३५ जसवन्तसिंहजी ३६ बुधसिंहजी ३७ तेजसिंहजी
३८ सवाईसिंहजी ३९ अखेसिंहजी ४० मूलराजजी
४१ गजसिंहजी ४२ रणजीतसिंहजी ४३ बैरीशालजी
४४ रावल शालिवाहनसिंहजी ।

इनमेंसे इतने राजाओंकी कविता मिली है—

१—रावल देवराजजी २—रावल भोजदेवजी
३—रावल मूलराजजी ४—रावल वैरीशालजी ।

रावल देवराजजी ।

रावल देवराजजी रावल विजयरावजीके बेटे थे इनका जन्म संवत् ६०८ में हुआ था। इनके पिताने पंवारों और झालोंकी जमीन छीन ली थी जिससे इन लोगोंने घातमें रहकर उनको भटंडे में मार डाला। जहां वह बराहा-राजपूत बरहायकी बेटीसे देवराज जीका विवाह करने गये थे। देवराजजीको उनकी ससुरालवालोंके इशारेसे एक राईका (ऊंट चरानेवाला) भटंडेसे लेनिकला। रास्तेमें देवायत नाम एक पुष्करणा ब्राह्मण अपने खेतमें निदाण (नलाव) कर रहा था। राईका देवराजजीको उसे सौंपकर आगे चलदिया। देवायतने उनको मोटे कपड़े पहनाकर अपने बेटोंमें नलाव करने को बिठा दिया।

पीछेसे शत्रुओंके सवार खोज देखते हुए वहां आये और खोजी ने कहा कि यहांसे ऊंट इकलासिया गया है अर्थात् उस पर एकही सवार है। सवारोंने खेतमें जाकर देवायतसे कहा कि यहां हमारा चोर आया है। उसने कहा कि यहां तो कोई तुम्हारा चोर नहीं है मैं हूं या मेरे बेटे हैं।

इतनेमें देवायतके बड़े बेटे रत्नाकी बहू घरसे रोटी लेकर आई। एक सवार उसके पास पूछनेको गया। वह इस भेदको

न जानती थी इसलिये देवराजजीके मनमें यह आशंका उपजी कि कहीं यह भांडा न फोड़ दे। इसलिये दौड़कर उसके पास गये। वह सवारसे उन्हींकी तरफ इशारा करके कह रही थी कि तुम्हारा चोर हो तो वह हो। इतनेमें देवराजजीने पहुंचकर उसके एक चपत लगाई और यह कड़का कहा—

मरीजि भाभी इण हांसे—चोर निटाणे के नासे।

अर्थ भाभी जल जाय तेरी हंसी चोर भागता है या निटाण (नलाव) करता है!

रत्नाकी बहूने हंसकर देवराजजीका हाथ पकड़ लिया और कहा कि तू बहुत धूम करता है आज तुझको पकड़वा दूंगी और सवारसे कहा कि यह तो मेरा देवर है चोर नहीं है। हममें ऐसीही हंसी हुआ करती है तुम अपना रास्ता लो क्यों देर करते हो।

इस बातसे सवारने सन्देहमें पड़कर देवायतसे कहा कि जो यह तेरा बेटा है तो इसको अपने साथ बिठाकर रोटी खालो। रत्नाने बापके कहनेसे देवराजके साथ रोटी खाकर उनलोगोंसे पीछा छुड़ाया।

देवराजजी देवायतको अपना पुरोहित और रतनाको अपना चारण बनाकर वहांसे बिदा हुए और यह कहगये कि जब मेरे दिन फिरेंगे तो तुमको इसका बदला दूंगा।

कुछ वर्षों पीछे देवराजजीने रावल रतननाथ योगिश्वरसे वरदान पाकर अपने मामाके गांव जांघेके भुट्टाराव(१) जूंझेसे भैंसके चमड़ेके बराबर जमीन ली। मगर जब उस चमड़ेके महीन महीन तस्मे काट कर उनके फैलावके बराबर जमीन पर कब्जा करके गढ़ बनाने लगे तो भुट्टोंने उसको गिराकर कहा कि यहां गढ़ मत बनाओ नहीं तो हम गिरा देंगे।

तब रावल देवराजजीने रावजूँझेको यह दोहा लिखकर भेजा—

रावजूंझ सुण वेनती बोल न पाछो लेह।
का भुट्ट का भाटिये कोट अडावण देह॥

---

(१) भुट्टा एक शाखा सोलंखी राजपूतोंकी है।

अर्थात् राव जूंझ विनय सुनिये अपनी प्रतिज्ञा भङ्ग न कीजिये किला बनाने दीजिये। वह या तो भुट्टोंके रहेगा या भाटियोंके।

परन्तु रावजूंझाने नहीं माना। इससे भाटियों और भुट्टोंसे लड़ाई हुई। भाटी जीते भुट्टे हारे। देवराजजीने जांघगढ़ लेकर बराहोंको भी मारा और बापका बैर लिया। उनका देहान्त संवत् १०३० में १४० वर्षकी उमर पाकर हुआ।

रावल भोजदेवजी।

यह रावलजी भी कवि थे इनके पिता रावल लांझा विजयराव जीको बड़े वीर और दाता देखकर चित्तौड़के सीसोदिया, मालवेके पंवार और गुजरातके सोलंखी राजाओंने उतर भडकवाड़ अर्थात् उत्तरदिशाके किवाड़की पदवी दी थी। इसलिये जब गजनीके बादशाह शहाबुद्दीन गौरीकी फौज गुजरात पर आई जिसके साथ इनके चचा जैसलजी भी थे जिनको इनके पिताने निकाल दिया था। इन्होंने यह सोचकर कि जब तुर्क गुजरात लेलेंगे तो जैसलजी उनको यहां भी चढ़ा लावेंगे पहलेहीसे उस फौज से लड़नेकी ठान ली और यह दोहे कहकर जैसलजी और शाही अफसरको लिख भेजे—

आड़ाकुवाड़ उतरादरा, भाटी झालण भार।
बचन राखां विजैराजरा, समहर बांधा सार ॥१॥
तोड़ां धड़ तुरकाणरा, मोड़ां खान मजेज।
आखे भोजो अधपती, जादिम मत कर जेज ॥२॥

अर्थ—भाटी उत्तराधराके किवाड़ और (रण) भारके झेलनेवाले हैं विजयराजका वचन रखेंगे और लड़नेको हथियार बांधेंगे।

तुर्कोंके धड़ तोड़ेंगे खानका मुंह मोड़ेंगे, राजा भोज कहता है कि तुम देर मत करो।

इस समरसन्देशेके पहुंचतेही वह सेना लुद्रवे पर आई जहां जैसलमेर बसनेसे पहले राजधानी थी। रावलजी खूब लड़े और अन्तमें साका करके काम आये। फौजका अफसर भी मारा गया।

रावल मूलराजजी ॥

संवत् १८१९ में जैसलमेरकी गद्दी पर बैठे और संवत् १८७६ में परलोकको गये। बड़े कवि थे व्रजभाषामें भी अच्छी कविता करते थे। यह बात एक सवैयेसे जानी जाती है जो व्यास सूर्यकरणजीने भेजा था—

व्रज मास विहाय विदेस बसे, हरि देख कृपा सुध क्यौं न लई।
निसवासर सोच रहे नितही, दुख ताप मिटै विधको न दई॥
घनश्याम बिना घन देखि घटा, तरुनी विरहानल तांप तई।
छिरक्यो न गयो उनको अगना, वर्षा अधवीचहु सूक गई॥

महारावल वैरीशालजी ॥

यह संवत् १९२१ में गद्दी पर बिराजे और सं० १९४७ में परमधामको प्राप्त हुए। कवितामें इनकी बहुत रुचि थी। डिंगल भाषा में आप भी कविता करते थे। यह दोहा अपने पौलपात चारण सेवा की प्रशंसामें कहा है—

रेणूकुलचा रूप ! तू कविराजा वां तिलक।
बाखाणे सह भूप, रतनू ब्रन सेवो रतन॥

अर्थ—हे रेणू कुलके रूप ! तू कविराजोंमें तिलक है। सब भूप कहते हैं कि चारणोंमें सेवारतनू रत्न है।

दूसरी धारा।

उदयपुर।

उदयपुरका राज्य जो राजपूतानेमें बहुत वर्षों तक स्वतन्त्र रहा है कविता और कवियोंका आदर करनेमें आदिसे प्रसिद्ध चलाआता है। इस राज्यमें कुम्भाजी आदि कई राणा महाराणा स्वयं भी अच्छे कवि हुए हैं। इनके पूर्वज गुजरातसे मेवाड़में आये थे। बापा रावलने संवत् ८०० के लगभग चित्तौड़का राज्य मौरी जाति के राजपूतोंसे लिया था। तबसे दिन दिन इनके वंशका तेज प्रताप राजपूतानेमें बढ़ता गया। यहां तक कि चित्तौड़के महाराणा दिल्ली के बादशाहोंसे भी नहीं दबे। समय समय पर वीरतापूर्वक लड़ते रहे। इसीसे हिन्दुस्थानमें हिन्दूपति बादशाह और हिन्दुआसूरज कहलाये। इन श्रीमानोंकी पीढ़ियां कुम्भा राणासे वर्त्तमान महाराणा श्रीफतहसिंह बहादुर तक पाठकोंके मनोरंजनके लिये लिखी जाती है फिर उनकी कविता लिखी जावेगी।

नं०	नाम	जन्मसंवत्	राजसंवत्	स्वर्गवास सं०
१	महाराणा कुम्भाजी (कुम्भकर्ण)	......	१४९०	१५२५
२	ऊदाजी (उदयकरण)	......	१५२५	१५३०
३	रायमल्लजी	......	१५३०	१५६५
४	संग्रामसिंहजी(सांगाराणा)	१५३८	१५६५	१५८०
५	रतनसिंहजी	......	१५८४	१५८८
६	विक्रमादित्यजी	१५७४	१५८८	१५९२
७	वनवीर (खवासवाल)	......	१५९२	१५९४
८	उदयसिंहजी	१५७९	१५९४	१६२८
९	प्रतापसिंहजी	१५९६	१६२८	१६५३

१०	अमरसिंहजी	१६१६	१६५३	१६७६
११	करणसिंहजी	१६४०	१६७६	१६८४
१२	जगतसिंहजी	१६६४	१६८४	१७०९
१३	राजसिंहजी	१६८६	१७०९	१७३७
१४	जयसिंहजी	१७१०	१७३७	१७५५
१५	अमरसिंहजी दूसरे	१७२९	१७५५	१७६७
१६	संग्रामसिंहजी दूसरे	१७४७	१७६७	१७९०
१७	जगतसिंहजी दूसरे	१७६६	१७९०	१८०८
१८	प्रतापसिंहजी दूसरे	१७८१	१८०८	१८१०
१९	राजसिंहजी दूसरे	१८००	१८१०	१८१७
२०	अरिसिंहजी	......	१८१७	१८२९
२१	हम्मीरसिंहजी	१८१८	१८२९	१८३४
२२	भीमसिंहजी	१८२४	१८३४	१८८५
२३	जवानसिंहजी	१८५७	१८८५	१८९५
२४	सरदारसिंहजी	१८५५	१८९५	१८९९
२५	स्वरूपसिंहजी	१८७१	१८९९	१९१५
२६	शम्भुसिंहजी	१९०४	१९१८	१९३१
२७	सज्जनसिंहजी	१९१६	१९३१	१९४१
२८	श्रीफतहसिंहजी	१९०६	१९४१	

इनमेंसे निम्नलिखित श्रीमानोंकी कविता मिली है—

१—महाराणा कुम्भाजी २—महाराणा प्रतापसिंहजी
३—महाराणा अमरसिंहजी ४—महाराणा राजसिंहजी
५—महाराणा अरिसिंहजी ६—महाराणा जवानसिंहजी
७—महाराणा सज्जनसिंहजी

मेवाड़के कवि श्रीमानोंकी कविता और उनके जीवन वृत्तान्तों की प्राप्तिमें हमको मित्रवर पण्डित गौरीशङ्करजी और बारहट कृष्णसिंहजीसे पूरी सहायता मिली है जो इस राज्यके इतिहासको अच्छा जानते हैं।

महाराणा कुम्भाजी ॥

संवत् १४९० में अपने पिता महाराणा मोकलजीके पीछे चित्तौड़की गद्दी पर बैठे थे। इन्होंने बड़े बड़े काम किये गुजरात और मालवेके बादशाहोंसे कई लड़ाइयां जीतीं। नागोर, मंडोर और रणथम्भोरके किले फतह किये। कुम्भलगढ़का किला और चित्तौड़गढ़के ऊपर एक बड़ा कीर्तिस्तम्भ बनाया। इनके सिवा और भी बहुतसे किले मन्दिर और तालाब बनवाये जिनसे उनका नाम हजारों वर्ष तक बना रहेगा।

यह महाराणा पण्डित भी बड़े थे। व्याकरण काव्य और गान-विद्या खूब जानते थे। संस्कृतके उत्तम कवि थे। सङ्गीतराज, सङ्गीतमीमांसा, एकलिङ्ग माहात्म्य, गीतगोविन्दकी टीका, सङ्गीत-रत्नाकरकी टीका आदि कई ग्रन्थ संस्कृतमें बनाये। मन्दिरों और कीर्तिस्तम्भों पर जो प्रशस्तियां लगाईं उनमें अपनी वंशपरम्परा ऐसी शुद्ध रीतिसे लिखी है जो आज इतिहासके शोध करनेवालोंको बहुत काम देती हैं। मेवाड़की पिछली ख्यातोंमें बड़वा भाटोंकी बहियोंसे महाराणाके मूल पुरुष बापा रावलका मानमोरीसे चित्तौ-ड़का लेना विक्रम सं० १९१ में लिखा है और उसी मानमोरीका एक शिलालेख संवत् ७७० का खुदा हुआ चित्तौड़गढ़ पर कर्नल टाडको मिला था। इन दोनों संवतोंमें कौन सत्य है और कौन असत्य, इस शंकाकी निवृत्ति महाराणा कुम्भाजीके एकलिङ्गमाहात्म्य से होती है जिसमें बापा रावलका संवत् ८१० में होना लिखा है।

श्लोक—खचन्द्रदिग्गजाख्येषु, वर्षे नागह्रदे मुने
चेत्रेच भुवि विख्याती, स्वगुर्गुरुदर्शनम्। १

अर्थ—संवत् ८१० में बापा रावल अपने गुरुके दर्शनको नाग-दाह ग्राममें आये।

संवत् १५२५ में यह महाराणा कुम्भलमेरसे एकलिङ्ग महादेवके दर्शनको गये थे। जब सवारी मन्दिरके पास पहुंची तो एक गऊने तांड़कर गर्जना की। उस समय तो महाराणा शिवजीके दर्शन

करके चले गये पर दूसरे दिन दरबारमें तलवार उठाकर मुंहसे यह शब्द कहे—

"कामधेनु तंडव करिय।"

और हर बातमें यही कहते थे जिससे सब लोग घबराये कि दरबारको यह क्या होगया। दो चार दिनके बाद छोटेकुंवर रायमलजीने हंसकर पूछा कि श्रीदरबार बारबार क्यों ऐसा फरमाते हैं? महाराणाने यह सुनतेही अति क्रोध करके हुक्म दिया कि इसको हमारे देशसे निकाल दो। कुंवरको लाचार ईडर जाना पड़ा। फिर तो मारे डरके किसीने चूं नहीं की सब चुपचाप सुना करते थे। अन्तको एक चारणने जो राजपूतके वेषमें किसी सरदारके पास रहता था अपने स्वामीसे कहा कि मैं दरबारका अभिप्राय समझ गया हूं कहिये तो उनका यह कहना छुड़ा दूं। वह सरदार उसको दरबारमें लेगया। महाराणाने देखतेही कहा—

कामधेनु तण्डव करिय।

चारणने इस पर तुरन्त यह छप्पय कहा—

जद धरपर जोवती, दीठ नागोरधरन्ती।
गायंत्री संघरण देखि, मनमांहि डरन्ती।
सूर कोटि तेतीस आण नीरन्तां(१) चारो।
नहीं चरत पीवन्त मने(२) करती हंकारो॥
कुम्भेणराण हणिया(३) कलम(४) आज सु अरि डर उत्तरिय।
तिणदीह द्वार शंकर तणे कामधेनु तण्डव करिय॥

(१) डालते (२) मनमें (३) मारे (४) मुसलमान।

इस छप्पयका यह भावार्थ है कि कामधेनु जब स्वर्गसे धरती पर नागोरमें गोवध होते देखती तो मनमें डरती। ३३ करोड़ देवता आकर उसको चारा डालते मगर वह कुछ खाती पीती न थी और मनमें दुखी रहती। पर आज यह देखकर कि कुम्भाराणाने तुर्कोंको मारा तो उसके दिलसे बैरियोंका डर जाता रहा इसलिये वह कामधेनु गऊ शंकरके द्वार पर आकर तांडती है।

महाराणाने कहा कि तू राजपूत नहीं, चारण मालूम होता है। मांग हम तुझपर प्रसन्न हुए हैं। उसने अर्ज की कि निस्सन्देह मैं चारणही हूं परन्तु श्रीदीवानने ब्राह्मणोंके इस कथनसे कि आपकी मृत्यु चारणके हाथसे है मेरी जातिके कुल आदमियोंको निरपराध देश निकाला देदिया है इससे अब उनको फिर देशमें आने और उनके गांव फिर मिलनेकी आज्ञा होजाना चाहिये। महाराणाने आज्ञा देदी और वह बात कहनी भी छोड़ दी। परन्तु चित्त शान्त न हुआ दूसरी बहकी बहकी बातें करने लगे। उसी दशामें एक दिन कुम्भलगढ़ पर मामादेवके कुण्ड देखनेको जाते थे कि बड़े कुंवर ऊदाजीने पीछेसे आकर तलवार मारी। महाराणा उसी क्षण मर गये। वह पितृद्रोही उस समय तो राजसिंहासन पर चढ़ बैठा परन्तु ७ वर्ष पीछे इसी अपराधमें मेवाड़से निकाला गया।

हमारे प्रियमित्र पण्डित गौरीशङ्करजी ओझाने महाराणाके यह तीन श्लोक गीतगोबिन्दकी रसिकप्रिया नामकी टीका प्रशस्तिमेंसे नमूनेके तौरपर लिख भेजे हैं। पहलेमें विष्णुकी प्रार्थना है, दूसरा महाराणा हम्मीरके वर्णनमें है और तीसरेमें महाराणाने अपनी वाणी और कवित्वशक्तिको दर्शाया है।

कल्याणं कमलापतिर्दिशतु मे यः कौस्तुभे राधया।
वीक्ष्य स्वं प्रतिबिम्बितं प्रतियुवत्प्रेषेति तर्काकुलम्॥
आश्लेषोन्मुखयापि मानप्टरया भत्वानया कैतवं।
तिर्यग्वक्रितकन्धरं वलितयासासूयमालोकितः ॥१

दानानिसंयतवनीयकमात्रपात्र।
मासाद्ययोददिरनन्तगुणोनिकामं।
पंचाननोविषमधारिषुयःप्रसिद्धस्वक्रो।
मृधान्यखिलशत्रुजयावहानि॥ ८

शृङ्गारसप्रपंचैरसद्दरुचिरौचित्ययुक्तौप्रकृष्टे।
लङ्कारैनायिकायागुणगणगणनैवर्णनैनायकस्य।

गीतीप्रीतीचक्रत्तीलयमनुरसिका: कौतुकं देत्तदेमा।
दोषैर्मुक्ता गुणाढ्या: शृणुत नरपते कुम्भकर्णस्यवाच ॥ १७

महाराणा प्रतापसिंहजी ॥

यह बड़े धीरवीर महाराणा थे। उमर भर अकबर बादशाहसे लड़ते रहे कभी दीन वचन मुंहसे नहीं निकाला, अधीन होना तो कहां रहा। मैंने इनका सविस्तर और सचित्र जीवनचरित अलग छपवाया है।

यह महाराणा कवि थे और काम पड़ने पर डिंगल भाषामें कविता कर लेते थे। वह कभी अकबरको बादशाह नहीं कहते थे सदा तुर्क(१) कहा करते थे। एक समय अकबर बादशाहसे किसीने कह दिया कि अब तो महाराणा प्रतापसिंह भी आपको बादशाह कहने लगे हैं। बादशाहने खुश होकर यह बात बीकानेरके महाराज रायसिंहजीके भाई पृथ्वीराजसे कही जो बादशाहके बड़े कृपापात्र थे। पृथ्वीराजने अर्ज की कि यह किसीने झूठही कह दिया है। प्रतापसिंह अपनी धुनका ऐसा पक्का और बातका पूरा है कि जो हठ उसने पकड़ी है उसको जीतेजी कभी न छोड़ेगा। आप चाहे इसका निर्णय करलें। बादशाहने कहा अच्छा तुम्हीं इसका निर्णय करो। तब पृथ्वीराजने यह दो सोरठे लिखकर महाराणाके पास भेजे—

पातल जो पतशाह बोले मुखहूंतां वयण।
मिहर पिछम दिस मांह ऊगे कासप राव सुत ॥१
पटकूं मूछां पाण, के पटकूं निज तनकरां।
दीजे लिख दीवाण, इन दोमहली बात इक ॥२

महारणाने जवाबमें यह दो दोहे लिखकर पृथ्वीराजको तसल्ली कर दी—

---

(१) अकबरनामेमें भी कहीं महाराणाका नाम प्रतापसिंह नहीं लिखा है, राणा कीका लिखा है। जिसके माने मरुभाषामें नासमझ बालक है।

तुरक कहासी मुख पते, इण दमसूं इकलिंग।
ऊगे जांही ऊगसी, प्राची बीच पतंग ॥ १
सुखहूंतां पीथल कमँध, पटको मूछां पांण।
पछटण है जेते पतो, किलमां(१) सिरके वाण ॥ २

पृथ्वीराजके कथनका अर्थ है—

प्रतापसिंहके मुंहसे यदि बादशाह शब्द निकले तो कश्यपसुत सूर्य पश्चिममें उगे। मैं मूछों पर हाथ पटकूं या अपने शरीर पर ? दीवान ! दोनोंमेंसे एक बात मुझे लिख दीजे।

अर्थात् जो तुम अकबरको तुर्कही कहो तो मैं अपने हाथसे मूछोंको तावदूं और जो बादशाह कहो तो छाती कूटूँ।

प्रतापका उत्तर।

प्रतापसिंहके मुंहसे तो एकलिंग महादेवजी अब भी तुर्कही कहलायेंगे और सूर्य जहां उगता है वहीं पूर्वमें उगेगा ॥१॥

हे पृथ्वीराज राठोड़ जबतक मुसलमानों पर तलवार चलानेवाला प्रतापसिंह विद्यमान है तब तक तुम खुशीसे मूछों पर हाथ डालो ॥ २ ॥

महाराणा अमरसिंहजी ॥

अति धीर वीर महाराणा प्रतापसिंहजीके पुत्र महाराणा अमरसिंहजी बड़ेदाता और रणशूर थे। इन्होंने भी अपने पिताकी भांति अकबर और जहांगीरकी फौजोंसे कई वर्ष तक लड़ाई की। अन्त को जब संवत् १६७१ में शहाजादा खुर्रम बहुतसी फौज लेकर मेवाड़ पर आया और सारे देशमें बादशाही अमल होगया तो राणाजीने उससे सुलह करके अपना मुल्क और चित्तौड़का किला वापिस लेलिया और फिर सुखसे राज्यकरके संवत्१६७६में परलोक को प्रस्थान किया।

यह राणाजी आप भी कवि थे और कवियोंकी कदर भी बहुत

(१) मुसलमान।

करतेथे। जिनदिनोंमें बादशाही फौजोंने इनका सारा मुल्क लेलिया था और इनको पहाड़ोंमें भी रहनेके वास्ते जगह न मिलती थी तब एक दिन इन्होंने यह नये दोहे कहकर नव्वाब अबदुर्रहीम खानखानांको चिट्ठीमें लिख भेजे थे।

हाडा कूरम राठवड़, गोखां जोख (१) करंत।
कह जो खानांखानने, (म्हें) बनचर हुआ फिरंत ॥१॥
तंवरां सू दिल्ली गई, राठोडां कनवज्ज।
अमर पयं पे खानने, वो दिन दीसे अज्ज ॥२॥

खानखांनाने जवावमें लिखा—

धर रहसी रहसी धरम, खप जासी खुरसाण(२)।
अमर विसंभर ऊपरां, राखो नहचो राण ॥१॥

अर्थ—हाडाकूरम राठौड़ झरोखोंमें आनन्द करता है। खानखानांसे कहना कि हम बनचर हुए फिरते हैं। तुंवर राजपूतोंसे दिल्ली गई। राठौड़ोंसे कन्नौज गया। अमरके लिये भी वह दिन आज दिखाई देता है।

खानखानांने जवाब दिया कि भूमि रहेगी धर्म्म रहेगा बादशाह मिट जायगा। हे राणा अमरसिंह विश्वम्भर पर निश्चय रखो।

महाराणा राजसिंहजी ॥

यह संवत्१७०९ में अपने पिता महाराणा जगतसिंहजीके पीछे उदय पुरमें राजसिंहासन पर विराजे थे। इन्होंने राज समुद्र तलाव बनाया जो बहुत बड़ा है उसकी पाल सफेद पत्थरोंकी बनी है जिसकी २४ ताकोंमें राज प्रशस्ति नाम एक ग्रन्थ २४ सर्गका खुदा है जो इतिहासवेत्ताओंके वास्ते बहुत उपयोगी है। क्योंकि उसमें उक्त महाराणा तकका इतिहास और राजसमुद्र बनाने और राज-

(१) जोख फारसी शब्द "जौक" का अपभ्रंश है जिसके माने मजे और स्वादके हैं।

(२) बादशाह।

नगर बसानेका पूरा हाल लिखा है। यह तालाब १४बर्षमें (संवत् १७१८—३२) ५ लाख रुपयेकी लागतसे तैयार हुआ था। इसकी प्रतिष्ठा माघ सुदी ५ संवत् १७३२ को बड़ी धूमधामसे हुई थी।

यहां तक तो महाराणा राजसिंहजीके उदयका समय था इसके पीछे इन पर भी वैसेही अचानक अनर्थपात औरंगजेबकी क्रूर दृष्टिसे हुआ जैसा महाराणा उदयसिंहजीके ऊपर उदय सागर बनाने और उदयपुर बसानेके पीछे अकबर बादशाहकी चढ़ाईसे हुआ था।

संवत् १७३५ में जोधपुरके महारजा जसवंतसिंहजीके मरे पीछे औरंगजेबने मारवाड़का राज्य अपने राज्यमें मिलाकर कुल हिन्दुओं पर जिजिया लगाया था। महाराणाराजसिंहने जिजियादेनेकीजगह जोधपुरके राठोड़ोंको शरणदी। इससे औरंगजेबने जल भुनकरमहाराणापर चढ़ाईकी। मेवाड़ सब लुटगई मन्दिर जगह जगह गिराये गये राजा और प्रजाको पहाड़ोंमें छुपना पड़ा। यह विपद दो वर्ष तक रही। अन्तमें महाराणा कार्तिक सुदी १० संवत् १७३७ को शाही फौजसे शाका करनेकी तैयारी करके कुम्भलगढ़के पहाड़ों मेंसे निकलाही चाहते थे कि सरदारोंने भोजन कर लेने और भूखे न लड़नेकी अर्जकी। महाराणाने फरमाया कि अच्छा कुछ खिचड़ी बनवालो। खिचड़ीमें जहर मिला दिया गया था जिसके खातेही महाराणाके प्राण मुक्त होगये। कुंवर जयसिंहने गद्दी पर बैठकर बादशाहसे सुलह करली।

आप बड़े पण्डित और कवि थे। इनका बनाया हुआ यह छप्पय राज नगरमें राज समुद्रकी पाल पर उन्हींके बनाये हुए महल के एक गोखेमें खुदा था जो कालन्तरसे चूनेमें दबगया था। अब थोड़े दिन हुए मित्रवर पण्डित गौरीशंकरजीने चूना हटवाकर उसे निकलवाया है। उसकी नकल यह है—

कहां राम कहां लखण नाम रहिया रामायण।

कहां क्रसणबलदेव प्रगट भागोत(१) पुरायण ॥१॥
बालमीक शुकव्यास कथा कविता न करंता।
कुण सरूप सेवता ध्यान मन कवण धरंता ॥२॥
जग अमर नाम चाहो जिके सुणो सजीवण अक्खरां।
राजसी कहै जग राणरो पूजो पांव कवेसरां ॥३॥

अर्थ—राम और लक्ष्मण कहां हैं रामायणमें उनका नाम रह गया है। कृष्ण बलदेव कहां, वह केवल भागवत पुराणसे प्रगट हैं। यदि वाल्मीकि शुक और व्यास कथा और कविता न करते तो कौन राम कृष्ण आदिके स्वरूपकी सेवा करता और कौन ध्यान धरता। यदि संसारमें अमर नाम चाहते हो तो सजीवन अक्षरोंसे सुनो, राणा जगका बेटा राजसिंह कहता है कि कवीश्वरोंके पैर पूजो।

महाराणा अरसीजी।

इनका मिजाज तेज था जिससे कई सरदार बिगड़ कर महाराणा राजसिंहके बेटे रतनसिंहको राज दिलानेके लिये मरहठोंकी फौज चढ़ा लाये। पहली लड़ाईमें तो महाराणाकी जीत हुई परन्तु दूसरी लड़ाईमें हार खाकर मरहठोंको कई परगने देने पड़े। इधर गोढ़वाड़का परगना जोधपुरके महाराजा बिजयसिंहजीने नाथद्वारे की रक्षा करनेके इकरार पर संवत् १८२७ में लेलिया क्योंकि वहां धन बहुत होने और सदा धनाढ्य पुरुषोंके यात्राके लिये आते रहनेसे लुटेरे घातमें लगे रहते थे। महाराणाको इस तरह बहुत सा मुल्क हाथसे निकल जानेका बहुत दुःख था। वह रात दिन दिलही दिलमें उसके लौटा लेनेकी उधेड़ बुन किया करते थे एक दिन उन्होंने कुंभलमेरके किले परसे गोढ़वालकी तरफ देखा तो एक चारणने यह दोहा सुनाया।

(१) भागवत पुराण।
(२) कविश्वरों।

अइए आंवलियांह, गुण सागर गोढ़ांगरी।
फूलां बहु फलियांह, नीका दातण नीपजे॥

अर्थ यह गुण सागर गोढ़वाड़की इमलियां है जहां बहुतसे फूलों और फलियोंकी अच्छी अच्छी डालियां होती हैं।

महाराणाके मुंहसे निकल गया कि अब कुछ दिनोंमें यह इमलियां अपने आजावेंगी। सरदारोंने यह बात सुनकर महाराणाका इरादा महाराजा विजयसिंहजीसे लड़नेका जानकर आपसमें सलाहकी और बून्दीके रावराजा अजीतसिंहजीसे मिलावट करके महाराणाको संवत् १८२८में उनके हाथसे मरवा डाला जब कि वह बून्दीको सरहद पर शिकार खेलनेके वास्ते गये थे।

अरसीजी कवि भी थे उन्होंने नागरीदासजीके इश्कचमनके जवाबमें रसिक चमन बनाया है जिसमेंसे यह कई दोहे यहां लिखे जाते हैं।

अगम इस्कके चिमनको, किसको आसंग होय।
सिर उतारि पासङ्ग करि, पहुंचे विरला कोय॥१॥
रेमहबूब इते दिनौं, खूब दिया दीदार।
प्यारे तेरे दरस बिन, पलके लगत पहार॥२॥
इस्क अखाड़ा अजब है, गजब चोट है यार।
तनको तिनके समगिने, सोही पावे पार॥३॥
इस्की इस्क सुभावका, जो पावे टुक स्वाद।
मस्तरहै महबूबसे, खलक लखे सब बाद॥४॥
सिर उतार लोह्र किरक, उसहीकी कर कीच।
आसिक बपरे पर रहे, उसी कीचके बीच॥५॥
इस्क जहरकी आबका, भर्या कहर दरियाव।
सिर उतारि धर नावकरि, तिर जाने तो आव॥६॥
इस्क चिमन इसकोनकी, कह्यो नागरी दास
रसिक चिमन अरसी नृपति, कीनौं अधिक प्रकास॥४४॥

महाराणा जवानसिंहजी।

यह महाराणा जवानसिंहजी १०वर्ष राज्य करके जवान अवस्था मेंही शान्त होगये। कहते हैं उनके सन्तान न थी और गद्दीका हक बागोरके महाराज सरदारसिंहको पहुंचता था इसलिये उन्होंने राणाजीको जहर दिलवा दिया। राणाजीके साथ जो सती हुई उन्होंने यह शाप दिया कि बागोरवालोंने राज्यके लालचसे हमारे पतिको भरी जवानीमें मरवाया है इससे यह भी जवान जवानही बेऔलाद मरेंगे और राज्य इनके वंशमें नहीं रहेगा। ऐसाही हुआ महाराणा सरदारसिंहजी, स्वरूपसिंहजी, शम्भुसिंहजी और सज्जनसिंहजी चारों बारी बारीसे उदयपुरकी गद्दी पर बैठकर बेऔलाद ५० वर्षमें मर गये और बागोरमें सिर्फ महाराज सोहनसिंहजी रह गये थे। उनको महाराणा सज्जनसिंहजीने महाराणा शम्भुसिंहको जहर दिलानेके इलजाममें बागोरसे निकाल दिया था इसलिये महाराणा सज्जनसिंहके मरे पीछे उनको गद्दी नहीं मिली। वह बेऔलाद बनारसमें मरे। यहां महाराणा फतहसिंहजी दूसरे खानदानसे गोद आकर गद्दीनशीन हुए।

महाराणा जवानसिंहजी अच्छे कवि थे। उनको कविताका शौक लड़कपनसे था। वह अपनी कविता लावेके ठाकुर जोरावरसिंहजीसे लिखाया करते थे।

पण्डित गौरीशंकरजीने महाराणाकी कविताके संग्रहका पता लगाकर उसमेंसे यह दोहे और कवित्त भेजे हैं—

उद्धव प्रति गोपी वचन।

सवैया।

ब्रजमें सुनि आगम उद्धवको चहुंओर सखीजन आनखरी।
सुधि पूछत हैं वहि प्रीतमकी तनमें मनमें अति प्रेमभरी।
ठगले हमकों नन्दलाल तबैं अब नेह दुरावनकी जुकरी।
मिलिहैं कब स्यामसुजान कहो तुम जानतहो मनकीसगरी॥५२

दोहा ।

विकल भई सब ब्रजबधू गई देह सुधि भूल ।
मनमोहनके चलतही प्रगट लही उर सूल ॥ ५३

कब मिलिहैं मोहन अली अति सनेह दुखदैन ।
जब जानत जीवो सफल सुनिहैं सुन्दर बैन ॥ ५४

उद्धव तुम आये इहां करत जोगकी बात ।
बरत वचन ऐसे लगे करत वज्रकी घात ॥ ५५

कहत तुमीसौं ब्रजबधू बात बिचार बिचारि ।
नारि मारिवेकों मनौ है मोहन तरवारि ॥ ५६

मानवती नायिकाके प्रति सखी वचन ।

चमकि चमकि चपला चपल घुमड़ि घटा चहुंओर ।
पिय बिनु तिय तन छिनकमें डारत मदन मरोर ॥ ९९

कवित्त ।

मोहन सौं मान करि बैठी प्रानप्यारी अति
कैसो री अयानपन पर्‍यो है री तनमें ।
प्रानहू तें अधिक सुजान स्याम जानें नित
राखत हैं मान तेरो सब तिय जनमें ।
भोर अरु सांझ दिन राति मैं न दीसे और
लेत मुख नाम ध्यान चाहै छिन छिनमैं ।
एरी अलबेली हेली सुनरी नवेली अब
मेरो कह्यो मान कांन राख मेरी मनमैं ॥ १००

सवैया ।

नैनन जोर मरोरन भौंह न मन्त्र मनो पढ़िके कछु दीनो ।
तो बिन स्याम सुजान अली छिनही छिनमें तन होत सुछीनो ।
दच्छन सौं अनुकूल भयो ब्रजराजपती अतिही परबीनो ।
नेक निहारतही मनभावन मोहनको बसमैं करि लीनो ॥ १०२

महाराणा सज्जनसिंहजी।

आप बागोरके महाराज शक्तसिंहजीके बेटे थे। महाराणा शम्भुसिंहजीके बेऔलाद मरने पर गद्दी पर बैठे और संवत १९४१ में बेऔलाद स्वर्गगामी हुए। इन्होंने खूब जोर शोरसे राज्य किया। साहसी पराक्रमी और मानी थे। बम्बईमें श्रीमान प्रिन्स आफ वेल्सकी पेशवाईको गये थे वहां इस बात पर कि इनकी बग्घी सर सालार जङ्ग दीवान हैदराबादके पीछे रखी गई थी नाराज हो कर उदयपुर चले आये थे। क्योंकि वह तो निजाम हैदराबादके पीछे भी नहीं रहना चाहते थे।

दो बेर जोधपुरमें पधारे थे। पिछली बेर संवत् १९४१ में मैं भी मिला था। मेरी पुस्तक 'स्वप्न राजस्थान' को महाराणा पहले से सुन चुके थे इसलिये मुझको देखतेही फरमाया कि यह है देवी-प्रसाद। गणेशपुरीजी पासही बैठे कुछ पढ़ रहे थे। कवि राजा सांवलदासजीने मुझसे कहा कि यह दरबारके बनाये कवित्त हैं। मैंने अरबीका यह वाक्य—"कलासुलमुलूक मुलूकुलकलाम" पढ़कर कहा कि बादशाहोंकी कविता कविताओंकी बादशाह होती है। यह सुनकर महाराणाने मेरी ओर देखा। आंखोंमें कुछ विस्मय कासा चमत्कार था।

महाराणा बड़े तेजस्वी थे। बीमारीकी हालतमें हवा बदलने आये थे। परन्तु चेहरा ऐसा देदीप्यमान था कि बीमार नहीं मालूम होते थे।

एकलिंगजीका इष्ट था रोज उनका पूजन करके भोजन करते थे। इस पर भी आर्य्योंकी बढ़ती कला देखकर स्वामी दयानन्दजी की नियत की हुई परोपकारिणी सभाके सभापति बन गये थे।

उसी समय जोधपुरमें यह खबर आई कि जामनगरके जाम बीभाजीके इकलौते बेटेको जो मुसलमानीके पेटसे है गद्दी पर बिठानेकी आज्ञा अङ्गरेजी सरकारने देदी है। इससे महाराणा बहुत भड़के और जोधपुरके महाराजा श्रीजसवन्तसिंहजीको भी

उभारकर तार और खरीते राजपूतानेके बड़े साहबको भेजे। जिनका यह आशय था कि हम राजपूतोंके घरू व्यवहारमें सरकारको इस तरह हस्तक्षेप नहीं करना चाहिये। इसमें हमारी रिश्तेदारी बिगड़ती है।

फिर जब महाराणा उदयपुर सिधारे तो महाराजा जसवन्तसिंहजी भी जो कलकत्तेको पधारते थे अजमेर तक पहुंचानेको गये। वहां कर्नल बिराडफोर्ड रजीडण्ट राजपूताना मिले। महाराणाने जबानी भी उनसे उसी मामलेका गिला किया। रायबहादुर मुंशी हरदयालसिंहजी सेक्रेटरी मुसाहिब आला राज मारवाड़ जो श्रीहुजूरके साथ थे कहते थे कि महाराणाने रजीडण्टसे नाक भौं चढ़ाकर बड़ी निर्भयतासे बातें की थीं।

महाराणा उदयपुर पहुंचनेके पीछे तुरन्तही स्वर्गवासी हुए। जीते रहते तो फिर भी जामनगरके मामलेमें कुछ जोर डालते। क्योंकि मुसलमानीके बेटेको वह एक राजपूत राजाकी गद्दी पर नहीं देखना चाहते थे।

महाराणा सज्जनसिंहजीने साहित्यमें भी अच्छा अभ्यास कर लिया था। वह कविता भी बनाते थे और अर्थ भी अच्छा करते थे। अवतार चरितकी इस चौपाईके अर्थ पर—

"सहज राग अधरन अरुनाये
मानहु पान पानसे खाये"

बहुत दिनसे झगड़ा चला आता है। जोधपुरके महाराजा मानसिंहजीने यह अर्थ किया था कि प्राकृत रंगने होठोंको ऐसा लाल कर दिया है कि मानो पान जैसे पतले होंठोंने पान खाया है। महाराणाने जब यह सुना तो फरमाया कि कविका मनोरथ होठोंकी प्रशंसा करनेका नहीं है वह तो होठोंकी लालीका वर्णन करता है। फिर उपमाको योजना होठोंसे करके पानसे होंठका अर्थ लेना जो कविके अभिप्रायके विरुद्ध है क्या जरूर है। इसका सीधा सादा अर्थ यही क्यों नहीं करदिया जावे कि स्वाभाविक रंगसे

होंठ ऐसे लाल थे कि मानो पांचसौ पान खाये थे। यह अर्थ सरल और सरस होनेसे सबने पसन्द किया।

महाराणाको सैकड़ों कवित्त अच्छे अच्छे याद थे। उनकी धारणाशक्ति बड़ी प्रबल थी। जिन दिनों मनुस्मृतिका राजधर्म्म प्रकरण स्वामी दयानन्द सरस्वतीसे पढ़ते थे तो घंटे भरमें २२ श्लोकों का अर्थ कण्ठस्थ करलेते थे। हर सोमवारको कवियोंकी एक सभा होती थी उसमें कवित्त पढ़े जाते थे। समस्याओंकी पूर्ति होती थी नायिकाओं और अलंकारोंका निरूपण होता था।

कविताके समझने और सुधारनेकी भी उनमें अच्छी शक्ति थी। कोटेसे चारण फतहदानजीने २५ कवित्त कविराजा सांवलदासजी के द्वारा महाराणाके पास भेजे थे। महाराणाने एक कवित्तमें— "पहुमी कसोटी हाट कसीरे खरा नरावरे सुयशको।" यह चरण देखकर कहा कि जो पहुमीकी जगह काश्यपी शब्द हो तो कसोटी से वर्ण मैत्री खूब होजावे।

फतहदानजीने जब यह सुना तो धन्यवाद किया। अर्जी भेजी और लिखा कि जो मुझे एक एक कवित्त पर एक एक लाख पसाव मिलता तो भी इतनी खुशी न होती जितनी मेरी कविता सुधार देनेसे हुई है।

ऐसेही जिन दिनों वंशभास्कर ग्रंथ बारहट कृष्णसिंहजीसे सुनते थे तो एकदिन वह पढ़ते पढ़ते रुकगये और बोले कि यहां झड़(१)

(१) यह झड़ हाडा दुर्जनशालकी चढ़ाईके वर्णनमें की है जो उसने रामपुरे पर की थी और यह वर्णन इस छन्दसे शुरू हुआ है—

करि हल्ल दुर्जनशल्ल नृप यों रामपुर पर उझ्झयो।
बजि नद्द मद्दल हद्द सद्दल भद्द बद्दल लों भख्यो।
उडि केतु दन्तिन पंति पंतिन सिन्धु तंतिन लग गयो।
नखराल चालन बाज जालन ज्वाल नालन जम गयो।
दिगपाल अठ्ठन ह्वै चयट्ठन सेतु सागर लुप्पयो।
दरि दिठ्ठें भवमिह कच्छप लिह निह कि मममयो

(चरण) मेंसे कुछ अक्षर गिर गये हैं केवल इतनाही पाठ है—

पहुमान रुक्किये अक्क ढक्किये बुच्छुरे

महाराणाने कुछ सोचकर कहा कि इसमें चक्क चकक्किये लिखना रह गया है और यह पूरा पाठ यों होगा।

पहुमान रुक्किय अक्क ढक्किये चक्क चक्किय बिच्छुरे

कुछ दिनों पीछे जो दूसरी प्रति आई तो उसमें यही पाठ था।

पवमान रुक्किय अक्क ढक्किय चक्क चक्किय बिच्छुरे

महाराणाकी बनाई कवितामेंसे कितनी ठुमरी, सोरठा, दोहा आदि एकत्र कर वर्त्तमान बीझोल्यांके राव कृष्णसिंहजीने "रसिक विनोद" नामक एक पुस्तक छपवाई है जिसमेंसे कुछ नमूनेके लिये नीचे उद्धृत करता हूं।

ठुमरी राग भैरवी ठेका पञ्जाबी व्रजभाषा स्थाई।

शङ्कर छवि छाय रही मनमैं।

भूखन व्याल खालगज अंबर भसम लगी तन मैं।
माल कपाल भाल चख सोहत तड़िता ज्यौं घन मैं॥
उमा सङ्ग अरधंग गङ्ग जुत भूतनके गन मैं।
सब व्यापक अव्यापक सोभित ज्यौं पङ्कज वन मैं॥
कण्ठ नील अरु सील अमङ्गल दै मङ्गल छन मैं।
जग विस्तार पार संहारत शिशु ज्यौं खेलन मैं॥
काल काल कीलत अघहारी नेत्रनिमीलन मैं।
सज्जन रान भिन्न भासत ज्यौं उदधि तरङ्गन मैं॥

राग देस ताल झूमरा मरुभाषा स्थाई।

बातड़ल्यां थांरी बिहारीजी म्हानें याद रहैली।
म्हें जाणी बिछुड़णरी म्हारी बात बलाय सहैली।
पण बिपरीत करी अब प्रीतम कथनां जगत कहैली॥
धीके रही मोहरे थांरे हूं तो राज गहेली।
रसिक सनेही छलरी छायण डायण बिरह दहैली॥

दोहा।

बदरा बदराही बने इन्दु बदनकी ओट।
कैसैं सहै कुमोदनी विरहवानकी चोट॥ १
सरद चन्द्रिका सरजसर नील कमल बन नीक।
पिय बिन सबही ह्वै रहैं ताप तपनसे ठीक॥ २

स्वामी दयानन्दजीका शोक।

नभ चव ग्रह ससि दीप(१) दिन दयानन्द सह सत्व।
वय तेसठ वतसर विचै पायो तन पञ्चत्व॥ १

कवित्त।

जाके जोह जोर तें प्रपञ्च फिलासिफन को
अस्त सो समस्त आर्य्यमण्डल तें मान्यो मैं।
वेदके विरुद्धी मत मतके कुवुद्धी मन्द
भद्रमद्र(२) आदिन पैं सिंह अनुमान्यो मैं।
ज्ञाता खट ग्रन्थनको वेदको प्रणेता जेता
आर्य्यविद्या अर्कह्नको अस्ताचल जान्यो मैं।
स्वामी दयानन्दजूके विष्णुपद प्राप्तह्न तें
पारिजात को सो आज पतन प्रमान्यो मैं॥ १

---

(१) स्वामी दयानन्दजी संवत् १९४० में कार्तिक वदी अमावस के दिन पञ्चत्वको प्राप्त हुए थे।

(२) भद्र मद्र हाथियोंकी जातिके नाम हैं।

तीसरी धारा।

जयपुर।

जयपुर राज्य जो पहले आमेरके नामसे प्रसिद्ध था राजपूतानेमें बड़ा प्रबल और प्रतापी है इसकी विशेष उन्नति महाराज मानसिंह जीसे हुई थी। यह महाराज बड़े वीर बड़े उदार और बड़े गुण-ग्राही थे। कवियोंको तो इन्होंने निहालही कर दिया था। इनके पीछे मिर्जा राजा जयसिंहजी, सवाई जयसिंहजी, माधवसिंहजी, प्रतापसिंहजी और सवाई रामसिंहजी भी अपने अपने समयमें कवियों और पण्डितोंके अच्छे आश्रयदाता होगये हैं। विहारीदास, कुलपति मिश्र और पद्माकर आदि सुकवि इन्हीं श्रीमानोंके आश्रित थे जिनके बनाये ग्रन्थ सतसई और जगत् विनोद आदि जगद् विख्यात हैं।

हम इन श्रीमानोंकी नामावली जन्मादि संवत् सहित महाराज मानसिंहजीसे लेकर वर्तमान समय तक नीचे देते हैं—

नं०	नाम	जन्म	राज्याभिषेक	स्वर्गवास
१	महाराजा मानसिंह	माघ सुदी ३ स० १६०८	माघ बदी ५ सं० १६५६	आषाढ़बदी १०, १६७१
२	राजा भावसिंह	सं० १६३३	आषाढ़ सुदी ११, १६७१	आषाढ़बदी १, १६७८
३	मिर्जा राजा जयसिंह	आषाढ़बदी १, १६६८	स० १६६८	आश्विनबदी ५, १७२४
४	राजा रामसिंह		आश्विनबदी ६, १७२४	१७४६
५	राजा विष्णुसिंह	सं० १७२८	आश्विनबदी ४, १७४६	माघसुदी ७, १७५६

६ महाराजा सवाईजयसिंह	अगहनबदी ७, १७४५	फाल्गुणबदी १०, १७५६	आश्विनसुदी १४, १८००
७ महाराजा ईश्वरीसिंह		कार्तिकसुदी ४, १८००	पौषबदी१२ १८०७
८ महाराजा माधवसिंह	पौषबदी१२ १७८५	पौषसुदी१४ १८०७	चैतबदी३ १८२४
९ महाराजा पृथ्वीसिंह	पौषसुदी१ १८१७	चैतबदी३ १८२४	वैशाखबदी ३, १८३५
१० महाराजा प्रतापसिंह	पौषबदी २ १८२१	बैशाखबदी ३, १८३५	सावनसुदी २, १८६०
११ महाराजा जगतसिंह		सावनसुदी १४, १८६०	पौषबदी ९ १८७६
१२ महाराजा जयसिंह	बैशाखसुदी१ १८७५	बैशाखसुदी १८७७	माघसुदी८ १८९१
१३ महाराजा रामसिंह	भादोंसुदी१४ १८९०	माघसुदी८ १८९१	भादों सुदी १४, १९३६
१४ महाराजा माधवसिंह	सं० १९१८	१९३६	वर्तमान हैं

महाराजा मानसिंह।

यह महाराजा बड़े प्रतापी और अति उदार हुए हैं। १० वर्ष की अवस्थामें पहले पहल अकबर बादशाहके पास गये थे। बादशाहने इनको काला और कुडौल देखकर पूछा कि खुदाकी दरगाहमें जब नूर बंटा था तब तू कहां गया था? बालक होनेपर भी इन्होंने बड़ी सावधानीसे जवाब दिया कि हजरत! मैं उस समय तो खुदाकी बन्दगीमें था मगर जब बहादुरी और सखावत बंटने लगी तो मैं नूरके बदले उन्हें लेआया।

यह सुनकर बादशाह बहुत खुश हुए और इनको अपने पास रखने लगे। उस दिनसे यह ५२ वर्ष तक बराबर अकबर और

जहांगीरकी सेवामें रहकर जङ्गी कामोंमें लगे रहे। इस मुद्दतमें इन्होंने खुरासानकीसरहदसे ब्रह्माकी सीमातक जिसका पूर्वसे पश्चिम को २००० कोसका फासिला होगा बड़ी धूमधामसे दिग्विजय किया और कई बड़े बड़े सूबोंके बिगड़े हुए काम सुधारे। उनकी तलवार पठानों पर ज्यादातर चलती रही। काबुल, बंगाल और उड़ीसेके पठान हरदफा उनसे हारे और राज्य छोड़ छोड़कर भागे। महाराजने पठान मारे भी बहुत थे जैसा कि बिहारी कविने अपूर्व युक्ति से इस कवित्तमें कहा है।

महाराजा मानसिंह पूरब पठान मारे
शोणितकी सरिता अजौं न सिमटत है।
सुकवि बिहारी अजौं उठत कबंध कूदि
अजौं लग रणतें रणोई ना मिटत है।
अजौं लों चहेलें पैशाचनतें चौंक चौंक
सची मघवाकी छतियांते लिपटत है।
अजौं लग ओढ़े है कपाली आली आली खालें
अजौं लग कालो मुख लालो ना छुटत है ॥१॥

उदयपुरके महाराणा प्रतापसिंह और ब्रह्माके बादशाह भी, लड़ाईमें उनसे जीत न सके थे। यों तो उनकी बहादुरीका वर्णन कवियोंने खूब किया है पर इस दोहेके कहनेवालेने थोड़ेहीमें बहुत कह दिया है—

जननी जने तो ऐसो जने जैसो मान मरद्द।
समदर खांडो पखालियो काबुल बांधी हद्द ॥१॥

और उनकी उदारताकी तारीफमें हरनाथ कविका यह दोहा काफी है—

बलि बोई कीरतिलता करण करी द्वै पात।
सींची मान महीपने जब देखी कुमलात ॥१॥

महाराजकी बड़ी रानी गौड़जीने एक दिन अपने महलमें बड़ा उत्सव किया और महाराजके पूछने पर कहा कि मेरे पिताने एक

चारणको एक करोड़ पसाव दान दिया है। महाराजने कहा, इसमें क्या आश्चर्य है राजा लोग देतेही रहते हैं। रानीने कहा महाराज कहने और देनेमें बड़ा फर्क होता है। महाराज उस समय तो चुप हो रहे दूसरे दिन छः करोड़ पसाव ६ चारणों अर्थात हरपाल, दुरसा, नरू, ईसर, किशनदास और डूँगरसिंहको दिये जिसका गुण आजतक चारण लोग गाते हैं।

किसी कवीश्वरको किसी आदमीके १०००) देने थे। जब कवि को उसने बहुतही तंग किया तो कविने महाराजके ऊपर हुण्डी इस कवित्तमें लिखदी—

सिद्धश्री मानसिंह कीरत विशुद्ध भई
जौलौं करो राज जौलौं भूमि तिरबेनी है।
रावरी कुशल हम सिसुन समेत चाहैं
घरी घरी पल पल यहांइ सुचेनी है॥
हुण्डी एक तुमपर कीनी है हजार की सो
कविनको राखो मान साह जोग देनी है।
पहुंचे परिमान भानवंशके सपूत मान
रोक गिन देनी जस लेखे लिख लेनी है॥१॥

महाराजने फौरन हुण्डी सकार दी और जवाबमें यह दोहा उस कवीश्वरको लिख भेजा—

अइतै हम महाराज हैं उतै आप कविराज।
हुण्डी लिखी हजारकी नेक न आई लाज॥

महाराजा प्रतापसिंह उपनाम व्रजनिधि।

यह महाराजा सङ्गीत नायिका भेद और पिंगलमें निपुण थे। रागरागिनियां भी अच्छी अच्छी बनाते थे। भाषा भर्तृहरिशतक, नेह संग्राम और इश्कलता आदि कई ग्रन्थ अति उत्तम बनाये हैं। वैद्यककी बहुतसी पुस्तकोंका सार लेकर अमृतसागर नाम पुस्तक बनाया है जो साधारणके लिये बहुत उपयोगी है। व्रजनिधिजी

और प्रतापेश्वरजीके विशालमन्दिर जयपुरमें बनवाये हैं।

इनके शासनकालमें कई लड़ाइयां हुईं। पहले बादशाहकी और मरहठोंकी फौजें इनके मुल्कमें आती रहीं। फिर अङ्गरेजोंसे स० १८६० में अहदनामा हुआ जिसकी पाबन्दीसे इन्होंने लखनऊके नवाब वजीरअलीखांको पकड़वा दिया जो संवत् १८५५ में अंगरेजों से लड़कर जयपुरमें आगये थे। इससे इनकी अपकीर्ति हुई और यह भी बहुत पछताये। उसी सोचमें शीघ्रही इस असार संसार से किनारा कर गये।

इनका नियम था कि नित्य एक नया पद बनाकर दर्शनके समय ब्रजनिधिजीके अर्पण किया करते थे। जिस दिन वजीरअलीखांको पकड़वाया उस दिन यह पद भेट किया था।

अजब फन्द आन पड्यौ गल मांहीं।
ऐरी सखी मैं कहा कहूं तोसे हित चित छण जहांहीं।
घर नहीं भावत कछू न सुहावत चौंक उठूं भहराईं।
चातक प्राण छुटत नहीं तनतें ब्रजनिधि घन बरसाई॥१

पद भी महाराजके बहुत रसीले होते थे। कुछ यहां लिखे जाते हैं—

ओतो बाणके ल्योंह न जाय,
हेलीहे बांकी नजयां को।
सरबिन परबिन पार निकस गयो घर आंगन न सुहाय।
अबके बचूं तो सुनो मेरी आली ब्रजनिधि वैद बुलाय॥१॥

निगोड़े नैना ही, पड़ी बुरी छै आ बान।
जा लिपटे कपटी मोहनसे नेक न मानी आन।
लाज सौ तरां सूं लीनी छे म्हांको, तोड़ी छे कुलकान।
ब्रजनिधिजी थे रसिकस्नेही, अब कांई हुआ छो अजान॥१॥

ऐसेही इनकी और कविता भी सुन्दर सरल और सरस है जिस का कुछ नमूना भर्तृहरिशतकसे नीचे दिया जाता है—

कुण्डलिया।

एरे मन मेरे पथिक तून जाहु इनठौर
तन तरुणी वनसघनमें कुच परबत बरज़ोर।
कुच परबत बरजोर चोर इक तहां बसत है
करमें लिये कमान बान पाचों बरसत है।
लूट लेत सब सौंज पकड़कर राखत चेरे
मूंद नयन अरु कान चल्यो तू कितकों एरे॥ १

दोहा।

करी भरथरी शतक पै भाषा भली प्रताप।
नीत महल रसगोखमें वीत राग प्रभु आप॥
श्रीराधागोविन्दके चरन सरन विसराम।
चन्द्र महल चित चुहलमें जयपुर नगर मुकाम॥
संवत् अष्टादस शतक बावन्ना शुभ वर्ष।
भादों कृष्णा पञ्चमी रच्यो ग्रन्थ करि हर्ष॥

फुटकर दोहे।

सेज सतावे उर दहे नैना नीर प्रहार।
व्रजनिधि जीवन दरस बिन उलटो दुःख अपार॥ १
चैत मासकी चांदनी चहुं दिस रह्यो प्रकाश।
व्रजनिधि जीवन दरस बिन उर निस लगत उदास॥ २
मोर टहके मन डिगै बादल जगमग बीज।
व्रजनिधि जीवन दरस बिन त्रिया अलोनी तीज॥ ३
मदन सतावे मोहिको अंग उठे अकुलाय।
व्रजनिधिजीवन दरस बिन जीव निसासन जाय॥ ४
कहा कहुं कहत न बने हियो हुओ अति हीन।
व्रजनिधिजीवन दरस बिन जलबिन तरफत मीन॥ ५

नेह संग्रामसे।

राधे बैठी अट्ट पर झांकत खोल किवार।
मनो मदन गढ़ ते चली है गोली इकवार॥

ह्वै गोली इकवार आय व्रजनिधिके लागी ।
छेदत तन मन प्राण कान्ह की सुध बुध भागी ॥
व्रजनिधि ह्वै बेहाल विरह बाधासों बांधे ।
मन्द मन्द मुसक्याय सुधा सों सींचत राधे ॥ १

राधे चञ्चल चखनके कसिकसि मारत बाण ।
लागत मोहन दृगनमें छेदत तनमन प्राण ॥
छेदत तन मन प्राण कान्ह घायल ज्यौं घूमें ।
तऊ चोटको चाव घाव घावनसों तूमें ।
सुभट सिरोमन धीरवीर व्रजनिधिसे लाधे ।
वाहीं सों निसद्यौस करत कमनैती राधे ॥ २

राधे घूंघट ओटतें चितऊ नेक निहार ।
मनो मदन करतें चली गुप्तीकी तरवार ।
गुप्तीकी तरवार मार घायल कर डारे ।
व्रजनिधि ह्वै बेहाल परे नैननके मारे ।
उठत कराह कराह कण्ठ गदगद सुर साधे ।
आधे आधे बोल कहत मुख राधे राधे ॥ ३

राधे घूँघट दूरकर मुरके रही निहार ।
मानो निकसी म्यान तें सीरोही तरवार ।
सीरोही तरधार वार व्रजनिधि पै कीनो ।
मुसकन मलमल गात घाव साबत कर दीनो ।
फिर फिर कर कर मार सार कर कर फिर साधे ।
टरत न अपनी टेक करत अद्भुत गति राधे ॥ ४

राधे निपट निसङ्क ह्वै चितै रही कर चाव ।
मानो काम कटार लै कियो कान्ह पै घाव ।
कियो कान्ह पै घाव पाव ठहरे न ठराये ।
गिरे भूमि पै घूमि प्राण आंखनमें आये ।

टोना टामन मन्त्र जन्त्र सरसाधन साधे ।
व्रजनिधिको बेहाल करत डरपावत राधे ॥ ५

अन्त ।

संवत अष्टादस शतक बावन्ना शुभ वर्ष ।
सुखद जेठ दसमी सुकल, सनीवार जुत हर्ष ।
सनीवार जुत हर्ष लगन यह सानकूल सब ।
व्रजनिधि श्रीगोविन्दचन्दके चरनन सों ढब ।
जयपुर नगर मुकाम चन्द महलहि अवलम्बित ।
भयो सुग्रन्थ प्रतच्छ अच्छ ता पाई संवित ॥ २६

चौथी धारा।

बीकानेर।

बीकानेरका राज्य जोधपुरके राव जोधाजीके बेटे बीकाजीका पैदा किया हुआ है। उन्होंने सं० १५२१ में जोधपुरसे उत्तरकी तरफ जांगल्य देशमें जाकर मुल्कगीरीकी और बीकानेर बसाकर जोधपुरसे अलग अपना राज्य जमाया। जबसे अबतक उनकी गद्दी पर इतने राव, राजा और महाराजा विराजमान होचुके हैं—

नं०	नाम	जन्मसंवत्	राज्यसंवत्
१	राव बीकाजी	१४९७	१५४७
२	रावनराजी	१५२५	१५६१
३	रावलूणकरणजी	१५१७	१५६१
४	राव जैतसीजी	१५४२	१५८३
५	राव कल्याणमलजी	१५७५	१५९८
६	राजा रायसिंहजी	१५९८	१६२८
७	राजा दलपतजी	१६२१	१६६८
८	राजा सूरसिंहजी	१६५१	१६७०
९	राजा करणसिंहजी	१६७३	१६८८
१०	राजा अनूपसिंहजी	१६९५	१७२६
११	राजा सुजानसिंहजी	१७४७	१७५७
१२	महाराजा जोरावरसिंहजी	१७६९	१७९२
१३	महाराजा गजसिंहजी	१७७९	१८०२
१४	महाराजा राजसिंहजी	१८०१	१८४४
१५	महाराजा प्रतापसिंहजी	१८३८	१८४४
१६	महाराजा सूरतसिंहजी	१८२२	१८४४
१७	महाराजा रतनसिंहजी	१८४७	१८८५

१८	महाराजा सरदारसिंहजी	१८७५	१९०८
१९	महाराजा डूंगरसिंहजी	१९११	१९३९
२०	महाराजा गङ्गासिंहजी	१९३७	१९४४

यह सब श्रीमान बड़े उदार दाता और कविता रसिक हुए हैं। इनकेहाथसे चारण भाट और दूसरी जातिके कविभी समय समयपर निहाल होते रहे हैं। इन अधीशोंमें इतने तो स्वयं वागीशही हुए

१—महाराजा रायसिंहजी
२—पृथ्वीराजजी
३—करणसिंहजी
४—अनूपसिंहजी
५—जोरावरसिंहजी
६—गजसिंहजी

इन्होंने आप भी नाना प्रकारके ग्रन्थ रचे और अपने आश्रित कवियोंसे भी रचवाकर विद्याका प्रचार और विद्यार्थियोंका उपकार किया है जिसका वर्णन हम आगे सविस्तर करेंगे। पर बड़े खेद की बात है जिस पूज्यमित्र और प्रतिष्ठित पण्डित पीताम्बर(१) जी की सहायतासे हमने इस प्रकारणकी सामग्री प्राप्त की थी वह हाल में अचानक स्वर्गवासी होगये और यह पुस्तक उनके दृष्टिगोचर होनेसे रह गई।

महाराजा रायसिंहजी।

महाराज संवत् १६२७से अकबर बादशाहके पास रहने लगे थे। बादशाहने इनको राजाका खिताब बखशा था और मनसब चार हजारी तक बढ़ा दिया था। इन्होंने बादशाहके लिये बड़े बड़े काम किये थे और लड़ाइयां भी बहुत जीती थीं। वैसेही दान भी बड़े बड़े दिये थे वह समयही दान और दातापनका था। उस

(१) यह बीकानेरके राज्य पुस्तकालयके अध्यक्ष और जनानी ड्योढ़ीके दारोगा थे। इनका देहान्त श्रावण संवत् १९६२में हुआ। बीकानेर दरबारके आश्रित होनेसे पहले मेओ कालिजमें सेकेण्ड पण्डित थे। इनके पिता पण्डित बैजनाथजी अजमेरमें प्रसिद्ध ज्योतिषी और मेरे पिताके परम स्नेही थे।

समय अकबर, बीरबल, खानखानां और राजा मानसिंह जैसे दानी और दाता मौजूद थे। वैसेही महाराज रायसिंहजी भी थे। इनका दान भी कम न होता था। यदि चारणोंकी बातें मानें और बीकानेरके इतिहासको सत्य जानें तो यह राजपूतानेके कर्णही थे।

इनका पहला विवाह महाराणा उदयसिंहजीकी राजकुमारी जसमादेसे हुआ था जिसमें इन्होंने दस लाख रुपये त्यागके बांटे थे। जब चित्तौड़के जनाने महलमें जाने लगे तो राणाजीकी बडारनों(१) ने एक जीना दिखाकर कहा कि जो कोई इसकी एक एक पैडी पर एक एक हाथी दे वह इसमें होकर ऊपर जासकता है नहीं तो दूसरा रास्ता और भी है। महाराज उसी जीनेसे ऊपर गये और गिनीं तो ५० पैड़ियां थीं। दूसरे दिन दरबार करके ५० हाथी और ५०० घोड़े सिरोपाव सहित चारणोंको दिये। उनमेंसे एक एक हाथी दूदाआसिया, देवराज रतनू, झूलासाइयां और भाट खेतसीको भी मिला था।

सिरोहीके राव सुरताननें बादशाहसे बागी होकर महाराजके साले जगमाल(२) सीसोदियाको मारडाला था। इसलिये महाराज बादशाहके हुक्मसे चढ़ाई करके राव सुरतानको बीकानेरमें पकड़ लाये और फिर दूदा आसियाके कहनेसे छोड़ दिया। दूदाने इस लिये महाराजके गुण और यशमें कविता बनाई थी और जब महाराजने फरमाया कि मांग, तो बचन लेकर यह मांगा कि राव सुरतानको छोड़ दीजिये।

अकबर बादशाहने राव मालदेवजीके बेटे राव चन्द्रसेनजीसे जोधपुर छीन लिया था। वह महाराज रायसिंहजीको देदिया मानो यह बदला राव तेजसीजीसे राव मालदेवजीके बीकानेर छीन लेनेका था। महाराजने जोधपुरमें एक बर्ष तक रहकर बहुतसे गांव हाथी घोड़े और लाख पसाव भाटों और चारणोंको दिये। और तो क्या नागोरका परगनाही शंकरजी

(१) दासियों। (२) महाराणा प्रतापसिंहका भाई।

बारहटको देदिया था जिसका हाल आगे आवेगा।

संवत् १६४५ में महाराजने सवातीन करोड़ पसाव(१) तीन चारणोंको दिये—

१—आडादुरसाको एक करोड़ पसाव।

२—बारहट लक्खाको एक करोड़ पसाव।

३—बारहट शंकरको सवा करोड़ पसाव।

संवत् १६४८ में महाराज बुरहानपुरसे जहां बादशाही काम को गये थे आकर जैसलमेरको पधारे। वहां फाल्गुण बदी १ को रावल हरराजकी बेटी गंगाबाईसे शादी की। महाराजने २०० घोड़े ५२ हाथी और २ लाख रुपये चारणोंको दिये।

संवत् १६५१ में फिर एक करोड़ पसाव शंकरजी बारहटको दिये। इसका हाल ख्यात(२)में इस तरह पर लिखा है कि शंकर ने महाराजकी ख्यात बनाई थी। वह बहुत अच्छी तो न थी परन्तु महाराजकी बखशिश बड़ी थी। जिससे महाराजने माघ बदी ५ को शंकरजीके मुजरा करतेही एक करोड़ देनेका हुक्म दिया। दीवानने खजानेसे १०००० थैलियां निकलवाईं और अर्ज की कि रुपये नजरसे गुजराकर दिलाने चाहियें। महाराजने समझ लिया कि यह जानता है, करोड़ रुपये देखकर महाराजकी नीयत बदल जायगी। जब दरबार हुआ और महाराज झरोखेमें बैठे तो उन्होंने फरमाया कि करमचन्द करोड़ रुपये यही हैं या कुछ और बाकी हैं? उसने अर्ज की कि पूरे हैं। फरमाया कि

(१) चारण भाटोंको जो दान दिया जाता है उसका नाम उन्होंने पसाव रखा है। बड़े दानको जिसमें गांव भी हो अत्युक्तिसे लाख पसाव और करोड़ पसाव कहते हैं। क्योंकि मांगनेवालों का स्वभाव होता है कि एक दाताके दिये हुए थोड़ेसे दानको बहुत साबताकर दूसरे दाताओंसे जांचते हैं।

(२) ख्यात—इतिहास और यशस्वन्धी ग्रन्थ।

भई यह तो थोड़े हैं, मैं तो जानता था कि बहुत होते होंगे । शंकर से कहा कि सवा करोड़का मुजरा करो । एक करोड़ तो यह ले जाओ और २५ लाखमें नागोर तुमको दिया गया । कहते हैं कि शंकरजीने नागोरकी पैदावार कई वर्ष तक खाई थी ।

महाराजका देहान्त संवत् १६६८ में बुरहानपुरमें हुआ । यह सुनकर कुंवर दलपतजी बीकानेरमें गद्दी पर बैठे ।

महाराज रायसिंहजी भी कवि थे । भाषा और संस्कृतमें कविता करते थे । पर उनकी भाषाकी कविताका कोई ग्रन्थ नहीं मिलता । और संस्कृतमें इनके बनाये दो ग्रन्थ, रायसिंह महोत्सव और ज्योतिषरत्नाकर नाम बीकानेरके पुस्तकालयमें हैं । एक वैद्यकका ग्रन्थ है और दूसरा ज्योतिषका । इनसे जाना जाता है कि महाराज इन विद्याओंमें भी निपुण थे ।

एक वेर दक्षिणमें कहीं फोगका बूटा नजर आगया । अपने देशका बूटा समझकर महाराज घोड़ेसे उतरे । उस बूटेको गलेसे लगाकर मिले और यह दोहा कहा—

तू से देशी रूंखड़ा म्हें परदेशी लोग,
म्हांने अकबर तेड़िया(१) तू क्यों आयो फोग ?

हे वृक्ष तू देशी है और हम परदेशी लोग हैं । हमें तो अकबरने बुलाया, हे फोग ! तू यहां कैसे आया ?

पीथल कवि महाराज पृथ्वीराज राठौड़ ।

यह वही पृथ्वीराज राठौड़ बीकानेरके राव कल्याणमलजीके बेटे और रायसिंहजीके भाई थे जिनकी कवितामें करनल टाडने दस हजार घोड़ोंका बल अपने "राजस्थान"में बताया है ।

इनका नाम भक्तमालमें भी आता है क्योंकि हरिभक्त भी थे ।

(१) बुलाया ।

पर हम यहां इनको कवियोंमें लिखते(१) हैं। यह पिंगल(२) और डिंगल(३) दोनों भाषाओंमें कविता करते थे और इनके बनाये कई ग्रन्थ भी सुने गये। परन्तु देखनेमें सिर्फ एक रुक्मिणीमंगल आया है जो डिंगलभाषामें है और पृथ्वीराजकी वेल कहलाता है। क्योंकि वह वेलिया जातिके ३०० गीतोंमें है।

कहते हैं कि पृथ्वीराजजी अकबर बादशाहके बड़े कृपापात्र थे और बादशाहके पासही रहा करते थे। परन्तु अकबरनामेमें इनका नाम बहुत कम आया है और वृत्तान्त भी विशेष नहीं है। उक्त तवारीखके तीसरे दफतरमें कुल ३ जगह पृथ्वीराज राठौड़का नाम मिलता है।

(१) पेज ८१में—सो यह और पृथ्वीराज राठौड़ मारवाड़के सरदारोंमेंसे हैं जो कल्ला राठौड़के साथ था।

(२) पेज ३५३ में, जहां बादशाहका अपने भाई मिर्जा हकीम के ऊपर काबुल जाना लिखा है उस समय पृथ्वीराज और रायसिंह दोनों भाई बीचकी फौजमें थे। यह बात संवत् १६३८ की है।

(३) और पृथ्वीराजका नाम पेज ७१८में आता है जहां अहमदनगर(४) वालोंसे लड़ाई होनेका हाल लिखा है जिसमें पृथ्वीराज

---

(१) नाभाजीने भी इनकी काव्यकुशलताका बखान इस छप्पय में किया है—

नरदेव उभै भाषानिपुन प्रथीराज कविराज हुव।
सवैया गीत स्लोक वेलि दोहा गुन नवरस॥
पिंगल काव्य प्रमाण विविध विध गायो हरिजस।
परिदुख विदुख सलाघ्य बचन रसना जु बिचारै॥
अर्थ विचित्र मोल सबै सागर उद्धारै।
रुक्मिणीलता वर्णन अनुप वागीश वदन कल्यान सुव॥
नरदेव उभै भाषानिपुन प्रथीराज कविराज हुव॥

(२) व्रजभाषा (३) मरुभाषा।

(४) चांद बीबीका अहमदनगर दक्षिणमें है।

दूसरे राजपूत सरदारोंके साथ अगली अनीमें था और लड़ाई संवत् १६५२ में हुई थी।

बीकानेरके इतिहासमें लिखा है कि पृथ्वीराजजी बड़े भगवद् भक्त थे। मानसी पूजा किया करते थे। लक्ष्मीनाथजीकी मूर्ति बीकानेरसे बाहर पधराई गई थी जो उन्होंने मानसी पूजा करते हुए आगरेमें बता दी थी। फिर बादशाहकी आज्ञा लेकर द्वारका जीको गये। गांव चण्डारवेमें राजबाई चारण जातिकी एक स्त्रीसे मिले जो शक्ति(१) थी। उसने कहा कि भई जो कभी तुझको काम पड़ जावे तो मुझे याद कर लेना।

बादशाहके यहां नौरोजके जलसोंमें मीनाबाजार लगता था जिसमें अमीरोंकी औरतें भी बुलाई जाती थीं। पृथ्वीराजने अपनी रानी चांपादेजीको वहां जानेसे मना कर रखा था। मगर रायसिंह जीके दीवान करमचन्दके भेद देदेनेसे (जो बीकानेरसे निकालाहुआ बादशाहके पास रहता था) बादशाह पृथ्वीराजसे उनकी अंगूठी देखनेके बहाने लेकर महलमें चले गये। जहांसे वह अंगूठी चांपादे रानीके पास पृथ्वीराजके नामसे भेजकर कहलाया कि तुम को मीनाबाजारमें जानेकी आज्ञा है। रानी धोखेमें आकर चली गई। पृथ्वीराजने खबर पाकर राजबाईको याद किया। उसने तुरन्त नाहरके रूपमें पहुंचकर बादशाहको डराया और मीना बाजारमें भलेघरोंकी औरतोंके बुलानेकी कसम दिलादी। फिर राजबाई अन्तर्धान होगई। बादशाहने पृथ्वीराजसे कहा कि तुम्हारे तो वीर वशमें हैं। अच्छा बताओ तुम्हारी मौत कहां होगी? उन्होंने कहा कि मथुराके विश्रान्तघाट पर होगी और वहां उस समय सफेद कव्वा आवेगा।

बादशाहने यह सुनकर उसी दिन उनको अटक पार नौकरीपर भेज दिया। जब इस बातको पांच महीने होगये तो एक दिन

(१) चारण लोग अपनी ऐसी लड़कियों और स्त्रियोंको जो बकरेका खून पिया करती हैं शक्ति कहते हैं और देवी मानते हैं।

किसी भीलने यमुनाके तट पर चकवा चकवीको बैठा देखा और कपड़ा डालकर पकड़ लिया। दूसरे दिन शहरमें बेचनेको लाया। लोगोंने उन पक्षियोंसे पूछा कि रातको कहां थे? उन्होंने कहा कि इसी पिञ्जरेमें। यह खबर बादशाहको भी पहुंची। उन्होंने फौरन पिंजरा मंगाकर उनको देखा। आश्चर्य करके कहा कि भीलने तो दुशमनीसे बेचनेके वास्ते इनको पकड़ा था मगर ऐसे दुशमन पर दोस्तोंको कुरबान करना चाहिये। नवाब खानखानां हाजिर थे उन्होंने इस भावका यह आधा दोहा कहा—

सज्जन वारूं कोड़धां या दुर्जनकी भेट।

बादशाहने कहा कि आधा भी कहो मगर वह कह न सके। तब पृथ्वीराजके वास्ते डाक बैठाई गई। उस दिनसे पृथ्वीराजके मरने में १५ दिन बाकी थे। पन्द्रहवें दिन वह मथुरा पहुंचे। वह दोहा पूरा करके बादशाहको रुक्का लिखा और विश्रान्तघाट पर दानपुण्य करके प्राण छोड़े। सफेद कव्वा आया। बादशाही आदमी भी देखतेही रह गये। फिर उन्होंने जाकर बादशाहसे सब हाल अर्ज किया और वह रुक्का भी दिया जिसमें यह आधा दोहा लिखा था—

रजनीका मेला किया बेह(१) के अच्छर मेट॥

यह बात संवत् १६५७ की है। इससे एक वर्ष पहले संवत् १६५६ में उनकी भावज गंगादे रानीने ठाकुर मालदेवको कल्याणपुरमें भेजकर रामसिंहको मरवा डाला था। पृथ्वीराजने दिल्लीसे मालदेव पर चढ़ाई करके अपने भाईका बदला लिया और कई गीत उनके शोकमें बनाये।(२)

टाडके इतिहासमें लिखा है कि जब महाराणा प्रतापसिंहने बादशाही फौजोंकी चढ़ाइयों और राज छुटजानेसे तंग होकर बादशाहको मेल करनेके वास्ते चिट्ठी लिखी तो पृथ्वीराजने कहा

(१) विधि।

(२) यहां तक तवारीख बीकानेरका उल्था है पर यह कहानी कीसी बातें हैं, इतिहासकी नहीं।

कि यह किसीने राणाजीकी तरफसे जाल किया है। राणाजीको मैं जानता हूं। वह जान देदेंगे पर दीन वचन मुंहसे न निकालेंगे। उधर राणाजीको कई दोहे लिखकर भेजे जिनसे उनको ऐसी वीरता चढ़ी कि वह चिट्ठी लिखनेसे पछताये और फिर बादशाही फौजोंसे लड़ने लगे।

इसी तरह उन्होंने अपने समयके दूसरे शूरवीर राजपूत सरदारों कला रायमल आदिकी तारीफमें अच्छे अच्छे गीत डिंगल भाषामें बनाये हैं।

पृथ्वीराजजीके बनाये ग्रन्थ श्रीकृष्णरुक्मिणी वेलमें जो रुक्मिणी जीके व्याहकी कथा है वह श्रीमद्भागवत आदिसे अनोखी है। उसकी बाबत उन्होंने ग्रन्थके अन्तमें यों कहा है—

रमतां जगदीसर तणोरहिसरस मिथ्या वइण न तासु मुहेह ।
सरसती रुखमणि तणी सहचरी कहीया मूंमै तेम कहेह ॥ १०२
रूप लछण गुण तणा रुखमणी कहवा सांमरथी कुण ।
जाणीया जसा मैं जंपीया गोविन्दराणी तणा गुण ॥ ३०३

यह ग्रन्थ संवत् १६३८ में बना है जो इसके अन्तिम दोहेसे जाना जाता है—

बरस अचल गुण अंग ससि संवत् तवियो जस कर श्रीभरतार।
करि श्रवणे दिन राति कंकरिः पामें श्रीफल भगति अपार ॥३०४

इस ग्रन्थमें उक्ति और उपमा अच्छी है और भाव भी अच्छे हैं। इसका मंगलाचरण यह हैं—

परमेसर प्रणवि सरसति पुणि सदगुरू प्रणवि त्रहे ततसार।
मंगलरूप गाइजे माहव च्यारसु एहिज मंगलचार ॥१॥
आरंभमें कियो जेणऊपायो गावण गुणनिधिहूं निगुण।
कर काठ चित्र पूतली निज कर चीतारे लागो चीतण ॥२॥

रुक्मिणीजीका सर्वाङ्ग पुष्पतीर्थ करके यों वर्णन किया हैं—

धराधर शृङ्गसधर सुपीन पयोधरघण छीण कटि अति सुकट्ट।
पदमणि नाभि प्रिया गलणी पर त्रवल त्रवेली सोणी तट्ट ॥२५॥

शरद ऋतुका वर्णन।

तुलबैठे तरुण तेज तम तुलिया भूप तुले कण तेण भत।
दिनदिन तिमल धुताया मेंदिन रातरात तिम गौरवरत॥

चारण लोग ऐसा कहते हैं कि पृथ्वीराजजीका यह ग्रन्थ सुन कर दो चार चारण कहने लगे थे कि ऐसी कविता चारणोंके सिवा कोई नहीं कर सकता। यह राजा किसी चारणके अंशसे तो नहीं है। इस पर पृथ्वीराजजीने मारवाड़से माधोदास दधवाड़िया, केशवदास गाडण, मालासांदू और दुरसा आडाको बीकानेरमें बुला कर यह ग्रन्थ सुनाया तो डेरे पर आकर माधोदास और केशवदास ने कहा कि राजा परम भगवद्भक्त है और उस पर ईश्वरकी कृपा है जिससे ऐसी रुचिर कविता करता है। माला और दुरसाने कहा कि नहीं, वही बात है जो लोग कहते हैं। पृथ्वीराजजीके हरकारों ने तुरन्त यह बात उनसे जाकर कही और उन्होंने माधोदासके वास्ते यह दोहा कहा—

चूंडेचत्रभुज सेवियो ततफल लागो तास।
चारण जीवो चार जुग मरो न माधोदास॥

और केशवदासके लिये यह कहा—

केसो गोरख नाथ कवि चेलो वियो चकार।
सिधरूपी रहता शबद गाडण गुणा भंडार॥

मालाजी और दुरसाजी दोनोंके वास्ते यह विसर एक दोहेमें कह दिया—

बाई बारे खालियां काई कही न जाय।
ऊदे मालो ऊपनो, मेंहे दुरसा थाय॥

एक कथन चारणोंका यह भी है कि पृथ्वीराजजीने जब यह बेल बनाई थी तबही भूला जातिके चारण सांइयांने भी रुक्मिणी-हरण नाम ग्रन्थ रचा था। वह और बेल दोनों ग्रन्थ एक साथ अक-बर बादशाहकी नजरसे गुजरे। बादशाहने पहले बेल और फिर रुक्मिणीहरण सुना। उसकी रचना बेलसे कुछ अच्छी देखकर

उत्तरमें परिहास अर्थात् मजाकसे फरमाया कि पृथ्वीराज तुम्हारी बेलको चारण बाबाकी हरनियां चर गईं। इसमें रुक्मिणीहरणकी तारीफ भी आगई।

यह भी कहते हैं कि पृथ्वीराजजीने एक छप्पय लिखकर एक गायके गलेमें बांध दी थी। वह फिरती फिरती बादशाही महल के नीचे जापहुंची और वहां जो सांकल अदालतकी लटक रही थी उससे अपना सींग सहलाने लगी। सांकलके हिलनेसे अन्दर घंटा बजने लगा। बादशाह यह समझकर कि कोई बड़ा फरियादी आया है बाहर निकल आये और गायके गलेसे कागज खोल कर यह छप्पय पढ़ी। फिर दिलमें करुणा करके हुक्मदिया कि अब गोवध न हुआ करे।

अधर धरत तृण मुक्ख, ताहि कोऊ नहिं मारत।
सो मैं निसदिन चरत, बेन दुर्बल उच्चारत॥
सदा खीर घृत झरत मोर, सुत पृथी बसावत।
कहा तुरकनको कटू, कहा हिन्दुन मधु पावत॥
हम तगार पन्हो हमही, गलो कटावन हम दिये।
पुकार अकब्बर साहसे, कहा खून हमने किये॥ १

महाराजा करणसिंहजी।

यह महाराज बड़े कवि थे। शाहजहां बादशादशाहने इनकी नोकरी दक्षिणमें बोल दी थी इसलिये यह उमर भर वहीं रहे। बीच बीचमें छुट्टी मिलने पर घर भी आजाते थे।

तवारीख बीकानेरमें लिखा है कि एक बेर औरंगजेब बादशाह के समयमें आप बीकानेर आये हुए थे। पीछेसे किसी बातपर बादशाहने नाराज होकर इन पर फौज भेजनेका हुक्म दिया। महाराज यह खबर सुनकर गांव देसणोकमें करणीजीके दर्शनको गये और एक गीत बनाकर सुनाया जो आजतक रतजगेमें गाया जाता है।

करणीजीने बादशाहका इरादा बदल दिया। उसने फौज

वापिस बुलाली और महाराजको दिल्ली(१)में बुलाकर बुरहानपुर भेज दिया। वहां आषाढ़ सुदी ४ संवत् १७२६ में उनका देहान्त होगया।

मतीरेकी बेल पर लड़ाई होना जो राजपूतानेमें मशहूर है वह इन्हीं महाराजा करणसिंहजी और नागोरके राव अमरसिंहजीकी फौजसे हुई थी। बात इतनी थी कि वह बेल नागोरकी सीमामें उगी थी और फल बीकानेरकी सीमामें जाकर लगा था। उसको इधर नागोरवाले और उधर बीकानेरवाले लिया चाहते थे। इस पर झगड़ा बढ़ते बढ़ते दोनों तरफसे फौजें आईं और लड़ाई हुई जिसमें बहुतसे आदमी मारे गये। अमरसिंहजीकी फौज थोड़ी थी जिससे उसकी हार हुई। अमरसिंहने आगरेमें यह खबर सुन कर फिर फौज भेजनेका हुक्म अपने दीवानको नागोरमें लिखभेजा। उधरसे महाराज करणसिंहने बख्शी सलाबतखांको लिखा। उसने शाहजहां बादशाहसे अर्ज करके सरहदके निर्णय करनेके लिये अमीन भेजनेकी मंजूरी लेली। इस पर राव अमरसिंहजीने महाराज करणसिंहजीकी तरफदारी करनेके खयालसे सलाबतखांको बादशाही दरबारमें मारडाला और खुद भी बादशाही आदमियोंके हाथसे मारे गये। डेरे पर जो राजपूत थे वह भी बादशाही फौज से लड़कर काम आये। यह इतना बड़ा भारत एक छोटीसी बात पर संवत् १७०१ में हुआ था।

महाराणा करणसिंहजी संस्कृत और भाषामें अच्छी कविता

(१) वंशभास्करमें लिखा है कि दिल्लीमें बादशाहने करणसिंह को पकड़वाना चाहा तो उन्होंने बूंदीके राव राजा भावसिंहजीको चिट्ठीमें यह पद लिखकर भेजा—

भाऊको भरोसो ज्यों भरोसो दीनानाथ को।

भावसिंहजीने करणसिंहजीके पास आकर डेरा कर दिया जिससे बादशाह करणसिंहजीको न पकड़वा सका।

करते थे और कवियोंके आश्रयदाता थे। उनके आश्रित कवियोंके बनाये इतने ग्रन्थ बीकानेरके राज्यपुस्तकालयमें मौजूद हैं—

१—साहित्यकल्पद्रुम, पण्डित दिनकर कवि कृत संवत् १७२३ (साहित्यमें)

२—कर्णभूषण, पण्डित गङ्गानन्द मैथिल कृत (साहित्यमें)

३—कर्णावतंस, होसिंग कृत (काव्यमें)

४—कर्णसन्तोष, मुद्गल कृत (छन्दशास्त्रमें)

५—वृत्तसारावली, यशोधर कृत (छन्दशास्त्रमें)।

महाराजा अनूपसिंहजी ।

यह महाराजा करणसिंहजीके बेटे थे। औरंगजेब बादशाहने करणसिंहजीको दक्षिणकी नौकरी पर भेजकर बीकानेरका मनसब इनको लिख दिया था। इससे महाराजने भी फाल्गुण बदी ४ संवत् १७२४ को इन्हें युवराज पदवी दी थी। संवत् १७२६ में करणसिंह जीका औरंगाबादमें देहान्त होने पर यह दिल्लीमें बादशाहके पास गये। बादशाहने इनको भी दक्षिणमें भेज दिया क्योंकि वहां शिवाजी मरहटेने बडा बलवा मचा रखा था। यह बहुत दिनों तक वहां रहे और वहीं संवत् १७५५ में ओडणीके थाने पर स्वर्गवासी हुए।

यह आप भी पण्डित थे और अच्छे पण्डितोंको अपने पास भी रखते थे। उन पण्डितोंने इनके आश्रय और अनुमोदनसे कितने ही ग्रन्थ भिन्न भिन्न विषयोंके संस्कृत भाषामें बनाये थे। बीकानेर राज्यके पुस्तकालयमें जो ग्रन्थ महाराज और उनके आश्रित पण्डितोंके इस समय विद्यमान हैं उनकी सूची इस प्रकार है—

महाराज कृत।

१ पाण्डित्यदर्पण (काव्य)

२ सन्तानकल्पलता (वैद्यक)

३ चिकित्सा मालतीमाला (वैद्यक)

४ संग्रहरत्नमाला (वैद्यक)

५ अनूपरत्नाकर (ज्योतिष)

६ अनूपमहोदधि (ज्योतिष)

७ संगीतवर्त्तमान (संगीत)

८ संगीतानूपराग (संगीत)

९ लक्ष्मीनारायण स्तुति (वैष्णवपूजा)

१० लक्ष्मीनारायणपूजासार छन्दोवद्ध (वैष्णवपूजा)

११ शालग्रामग्रन्थ अनूप विवेक (वैष्णवपूजा)

१२ सांबसदाशिवस्तूप (शिवपूजा)

१३ कौतुकसारोद्धार राजविनोद।

१४ संस्कृत व भाषा कौतुक।

१५ अनूपविवेक शालग्राम परीक्षा।

१६ नीतिग्रन्थ।

पण्डितमण्डली कृत।

धर्म्मशास्त्र।

१ तीर्थरत्नाकर, अनन्त भट्ट कृत।

२ महाशान्ति, रामभट्ट कृत।

३ शान्तिसुधाकर, विद्यानाथ सूरि कृत।

४ अनूपविलास निबन्ध, मणिराम दीक्षित कृत संवत् १७४७

कर्म्मविपाक।

५ केरली सूर्य्यारुणस्य टीका, पन्तुजी भट्ट कृत।

वैद्यक।

६ अमृतमञ्जरी, होसिंग भट्ट कृत।

७ शुभमंजरी, अम्बक भट्ट कृत।

ज्योतिष।

८ अनूपमहोदधि, वीरसिंह ज्योतिषराट कृत संवत् १७३९

९ अनूपमेघमाला, रामभट्ट कृत।

१० अनूपव्यवहारसागर, मणिराम कृत।

११ ज्योत्यत्ववासना, विद्यानाथ सूरि कृत ।

संगीत ।

१२ अनूपसंगीतरत्नाकर, भाव भट्ट कृत ।

१३ अनूपसंगीतविलास, भाव भट्ट कृत ।

१४ संगीतविनोद, भाव भट्ट कृत ।

१५ संगीत अनूपांकुश, भाव भट्ट कृत ।

१६ संगीत अनूपोद्देश्य, रघुनाथ गोस्वामी कृत ।

विष्णुपूजा ।

१७ नाना छन्दोक्तता श्रीलक्ष्मीनारायणस्तुति, शिव पण्डित कृत

शिवपूजा ।

१८ रुद्रपति, रामभट्ट कृत । १७४९

१९ शिवताण्डवकी टीका, नीलकण्ठ कृत ।

२० अनूप कौतुकार्णव, राम भट्ट कृत ।

२१ यन्त्रकल्पद्रुम, विद्यानाथ कृत ।

२२ नानाछन्दसमन्वित, लक्ष्मीनारायणस्तुति, भट्ट शिवनन्दनकृत

२३ यन्त्रचिन्तामणि, विद्यानाथ सूरि कृत ।

२४ यन्त्रचिन्तामणि, दामोदर कृत ।

२५ तन्त्रलीला, तर्कानन सरस्वती भट्टाचार्य्य कृत ।

२६ सहस्रार्जुन दीपदान, त्रिम्बक कृत ।

२७ वायुस्तुतनुष्ठानप्रयोग, रामभट्ट कृत ।

राजधर्म्म ।

२८ कामप्रबोध, जनार्दन कृत ।

२९ दशकुमारप्रवन्ध, शिवराम कृत ।

३० माधवीय कारिका, शांव भट्ट कृत ।

महाराजा जोरावरसिंहजी ।

महाराजा जोरावरसिंहजी माघबदी ५ संवत् १७९२ को गद्दी पर बैठे थे । संवत् १७९६ में जोधपुरके महाराजा अभयसिंहजीने

बीकानेरको आघेरा। उस समय एक दिन सवेरे सुजानमहल पर एक सफेद चील बैठी नजर आई। महाराजने उसको करनीजीका रूप समझकर यह दोहा कहा—

दाढ़ाली(१) डोकर थई का तू गई विदेश
खून(२) बिना क्यों खोसजे निज बीकांरा देस(३)।

इसके जवाबसें किसीने यह दोहा पढ़ा—

निज नैसां जोखों नहीं जोखों है जोधाण(४)
अभी अपूठो जावसी मिले मीटो माण(५)॥१॥

मगर इस दोहेबाजीसे घेरा नहीं उठा। महाराजा जोरावरसिंहजीको जयपुरके महाराजा सवाई जयसिंहजीसे मदद मांगनी पड़ी। खतमें यह दोहा लिखकर महता आनन्दरूपको दिया—

अभो ग्राह बीकाण(६)गज मारू समंद अथाह
गरुड़ छोड़ि गोविन्द ज्यों साहि करो जयसाह।

महता मुर्दा बना। उसको "राम नाम सत्य" करते लेगये। जोधपुरकी फौजने भी मुर्दा समझकर नहीं रोका।

फिर वह सांड़नी पर सवार होकर महाराज सवाई जयसिंहजी के पास गया। महाराजने दोहेमें अपने इष्ट गोविन्दजीका नाम देखकर पूछा कि तुम्हारे देवता लक्ष्मीनारायणजी और करनीजी इस वक्त कहां गये? महताने जवाब दिया कि अपने घटमें विराजे हैं। इससे महाराजाने खुश होकर जोधपुर पर चढ़ाई की। महाराजा अभयसिंहजीको बीकानेर लिये विनाही लौटना पड़ा।

फिर महाराजा जोरावरसिंहजी जोधपुरके पास गांव बनाडमें जाकर सवाई जयसिंहजीसे मिले। खीमराज माधोदासोतने यह दोहा महाराजाकी तरफसे जयसिंहजीको सुनाया—

बीकानेर गयन्द जिम गह्यो अभैरज(७) ग्राह
सुनी पुकार सहायकी हरिजी ज्यों जयसाह॥१॥

---

(१) करनीजी (२) कसूर (३) घर (४) जोधपुरका राज्य (५) मान (६) बीकानेरका राज्य। (७) अभयसिंहजी

महाराजा जोरावरसिंहजी संस्कृत और भाषाके अच्छे कवि थे। उनके बनाये दो संस्कृत ग्रन्थ एक वैद्यकसार और दो पूजापद्धति बीकानेरके राज्य पुस्तकालयमें हैं। भाषामें उन्होंने रसिकप्रिया और कविप्रियाकी टीका बनाई है जिसका नाम ललितका है और उसे जोरावरप्रकाश भी कहते हैं।

महाराजा गजसिंहजी ॥

महाराज गजसिंहजी भी कवि थे। इनसे और जोधपुरके महाराजा विजयसिंहजीसे खूब मेलमिलाप था। एक बार उनके साथ, जब कि मरहठोंने जोधपुर और नागोरको घेरा था जयपुर में भी महाराजा माधवसिंहजीसे मदद लेनेको गये। फिर नाथ-द्वारेमें जाकर राणा अरसीजीसे मिले। परम वैष्णव थे। भजन खूब बनाते थे और कविता भी करते थे। इनकी कविताक एक गुटका बीकानेरके पुस्तकालयमें है। दो भजन उनके बनाए लिखे जाते हैं—

भौंह बांकी हो राधेवरकी।
रास समै कर नीको बिराजत मुरली अधर अधरकी।
राधाराई सब बन आई और आई हैं घर घर की।
सुनत तान मुनिजन अकुलाये उछलि मीन सरसर की।
गजा कहै भव पीड़ मिटत है छवि निरखत गिरधर की॥

भूले मतजाजोरे म्हाने राखत हार कन्हैयो छे।
इन बाड़ीको फलफूलनसे, नित हरी रखो महकायेरे।
इन बाड़ीको कृपादृष्टि कर नेहमेह सींचायेरे।
इन भौसागरसे तिरबो चाहै तारण गज अरु ग्राहेरे॥२॥

पांचवीं धारा।

कृष्णगढ़।

कृष्णगढ़का राज्य जोधपुरके महाराजा सूरजसिंहजीके भाई कृष्णसिंहजीने अकबर बादशाहसे पाया था और कृष्णगढ़ भी उन्हींने ही संवत् १६६६ में बसाया। तबसे अबतक इनकी इतनी पीढ़ियां हुई हैं—

नं०	नाम	जन्म	राज्याभिषेक	स्वर्गवास
१	महाराज श्रीकृष्णसिंह	कार्तिकबदी ८ स० १६३२	सं० १६५४	आश्विन सुदी ३, १६७२
२	महाराज श्रीसेसमल	सावन सुदी २ स० १६५५	आश्विन सुदी ३, १६७२	जेठ सं० १६७५
३	महाराज श्रीजगमाल	जेठ सुदी ७ सं० १६५७	पौष बदी १३ स० १६७५	माघ सुदी १२, १६८५
४	महाराज हरिसिंह	बैशाख बदी ८ सं० १६६३	फाल्गुण सं० १६८५	बैशाख सुदी ८, १७००
५	माहराज रूपसिंह	बैशाखसुदी ११ सं० १६८५	जेठ सुदी ५ सं० १७००	जेठसुदी ८ सं० १७१५
६	महाराज श्रीमानसिंह	भादों सुदी ३ सं० १७१२	आषाढ़बदी १०, १७१५	कार्तिकबदी १०, १७६३
७	महाराज राजसिंह	पौषसुदी १२ सं० १७३१	कार्तिक बदी १०, १७६३	बैशाखबदी ७, १८०५
८	महाराज श्रीसांवतसिंह रूपनगरमें	पौषसुदी१२ सं० १७५६	बैशाखसुदी५ १८०५	भादोंसुदी३ १८२१
९	महाराजा सरदारसिंह	भादोंसुदी २ १७८९	आश्विनबदी३ १८२१	बैशाखबदी ६, १८२३

१० महाराजा श्रीबहादुरसिंह पौषवदी१२ बैशाखसुदी फाल्गुणसुदी
कृष्णगढ़में १७६८ ३, १८०५ ३, १८३८

११ महाराज श्रीविड़दसिंह फाल्गुणसुदी फाल्गुणसुदी कार्तिकबदी
रूपनगर और कृष्णगढ़ १७९६ १८३८ १०, १८४५

१२ महाराज श्रीप्रतापसिंह भादोंसुदी११ कार्तिकबदी फाल्गुणबदी
१८१९ ८, १८४५ ४, १८५४

१३ महाराज श्रीकल्याणसिंह कार्तिकसुदी फाल्गुणसुदी जेठसुदी१०
१२, १८५१ ३, १८५४ १८९५

१४ महाराज श्रीमोहकमसिंह भादोंसुदी५ आषाढ़वदी जेठबदी१२
१८७३ १८९५ १८९७

१५ महाराज श्रीपृथ्वीसिंह बैशाखबदी ५ बैशाखबदी अगहनसुदी
१८९४ १३, १८९८ १२, १९३६

१६ महाराज श्रीशार्दूलसिंह पौषबदी ९ पौषबदी ९
१९१४ १९३६

१७ महाराज श्रीमदनसिंह

इस राज्यके सभी नरेश कविताके प्रेमी हुए हैं। इन्होंने अनेक कवियोंको आश्रय दिया है। पर जो स्वयं कविता करते थे वह यह थे—

१—महाराजा रूपसिंहजी २—राजा मानसिंहजी
३—राजा राजसिंहजी ४—राजा सावन्तसिंहजी
५—राजा बहादुरसिंहजी ६—राजा बिड़दसिंहजी
७—राजा कल्याणसिंहजी ८—महाराजा पृथ्वीसिंहजी

इनकी कविता और संक्षिप्त जीवनी आगे लिखी जाती है। कृष्णगढ़के राज्यकवि सेवक जयलालजीसे इसके हस्तगत करनेमें बड़ी सहायता मिली।

महाराजा रूपसिंहजी ॥

यह जब गद्दीपर बैठे, उससमय शाहजहांबादशाहका बलख(१) बुखारा(२)के उजबकों(३)से बिगाड़ होरहा था। शाहजहांने संवत् १७०२ के फाल्गुण महीनेमें बलख पर शाहजादे मुरादको भेजा तो उसके साथ इनकी भी नौकरी बोली। यह वहां गये और ३ वर्ष तक उजबकोंसे लड़ते रहे। संवत् १७०४ में वापिस आये। संवत् १७०५ में शाह ईरान(४)ने कन्दहार(५) का किला शाहजहांके किलेदारोंसे छीन लिया। इस पर ईरानियोंसे लड़ाई शुरू हुई और संवत् १७१० तक होती रही। इसमें भी रूपसिंहजी शामिल थे। १७१४ में शाहजहांके बेटोंमें तख्तके वास्ते बापके जीतेजी लड़ाई छिड़ी। ज्येष्ठ सुदी ८ संवत् १७१५ को शाहजादे दाराशिकोह और औरंगजेबसे बड़ी घमसानकी लड़ाई हुई। महाराज दाराशिकोहकी तरफ थे। औरंगजेबकी फौजको काटते उसकी सवारी के हाथी तक जापहुंचे और वहां पैदल होकर हौदेकी रस्सियां तलवारसे काटने लगे। यह देखकर बहुतसे आदमी उनपर टूट पड़े। आप उनसे लड़कर टुकड़े टुकड़े होगये।

इतिहासमें वैसी बहादुरीकी नजीर बहुत कम मिलती है जैसी उस दिन महाराजा रूपसिंहजीने दुनियाको दिखाई थी। इसकी तारीफ मुसलमानोंने भी अपने इतिहासोंमें लिखी हैं।

"सैरुलमुताखिरीन"में लिखा है—राजा रूपसिंह राठोड़ महाराजा जसवन्तसिंहका चचेरा भाई था। वह महाराजासे बराबरीका दावा रखता था और अपनेको उसके बराबर समझता था।

---

(१) बलख अब अमीर काबुलके पास है।

(२) बुखारा अब रूसमे अधीन है। (३) मुगलोंकी एक शाखा।

(४) ईरानका बादशाह उस समय सैयद जातिका शाह शुजा नामका था अब काचार जातिका तुर्क बादशाह मुजफ्फरुद्दीन शाह है। (५) कन्दहार भी अब काबुलके अमीर हबीबुल्लहखांके पास है।

शत्रुशाल हाड़ा, रामसिंह राठोड़, बिठ्ठलदास गौड़का बेटा भीम और भतीजा राजा सेवाराम और दूसरे नामी राजपूत सरदार बहादुरीका कदम बढ़ाकर औरंगजेबके पास तक जापहुंचे। राजा रूपसिंह राठोड़ अति वीरता और निर्भयतासे सबके आगे बढ़कर औरंगजेबके हाथी तक जापहुंचा और पैदल होकर हाथीके पांवके नीचे अपनी बहादुरीके जौहर दिखलाने लगा। उसने हौदेकी रस्सियां काट डालीं। औरंगजेबने उसकी मरदानगीको पसन्द करके उस समय बहुत चाहा कि वह जीता हाथ आवे और उसका नौकर होजावे। पर ऐसा न हो सका। राजा औरङ्गजेबके नौकरों के हाथसे मारा गया।"

सच है "रज्जब साचे सूरको बैरी करै बखान।"

महाराज रूपसिंहजी कवि थे उनको गानविद्याका भी ज्ञान था। पद अच्छे बनाते थे। जब बलखकी लड़ाईमें थे तो वहांकी तकलीफोंसे तंग होकर यह पद कहा था—

प्रभुजी इहां रहै कछु नाईं।
करिये गवन भवन दिशि अपने, सुनिये अरज गुसांईं।
देखी बलख बरफछ देखी, अधम असुर अवलोकें।
मध्यप्रदेश वेशछ मध्यम, इहां कहांले रोकें?
भगतवछल करुणामय सुखनिधि, कृपा करो गिरधारी।
रूपसिंह प्रभु विरद लजत है, ब्रज लै बसो बिहारी॥

महाराजा मानसिंहजी।

यह भी कविता करते थे विशेषकर पद बनाते थे। पर कोई पद उनका इस पुस्तकमें लिखनेके लिये नहीं मिला।

महाराजा राजसिंहजी।

यह कृष्णगढ़के सातवें महाराज थे। इनकी गद्दीनशीनके कई महीने पीछे औरंगजेब बादशाह मर गया। उसके बेटे आजम और मुअज्जम तख्तके वास्ते आगरेके पास आपसमें लड़े। महाराज

राजसिंहजी मुअज्जमको और कोटेके महाराव रामसिंहजी आजम की तरफ थे। लड़ाईके वक्त दोनोका मुकाबिला होगया जिसमें महाराव रामसिंहजी महाराजके हाथसे काम आये। इसको बाबत किसी चारणने कहा है—

रावरे हाथ राघाव महाराज रे
राव महाराजरे हाथ रहिया।

फिर जब मुअज्जमशाहके मरने पर संवत् १७६८ में उसके चारों बेटे मुअज्जुदीन, अजीमुश्शान, जहांशाह और रफीउश्शान आपस में लड़े थे महाराज राजसिंहजी शाहजादे अजीमुश्शानके साथ थे।

तवारीख सैरुलमुताख्खिरीनमें लिखा है कि जब लाहोरके पास मुअज्जुद्दीन जहांदारशाह, अजीमुश्शानसे लड़ने आया तो दयाबहादुर नागर, राजा मोहकमसिंह खत्री और राजा राजसिंह वगैरहने एक जबान होकर अजीमुश्शानसे अर्ज की कि अभी दुशमनोंको फौज जियादह नहीं है। एक धावेमें उसको भगा सकते हैं। उसने जवाब दिया कि अन्दकबाशेद अर्थात् जरा ठहरो। फिर जब इन लोगोंने उससे हमला करनेका हुक्म मांगा तो उसने वही अन्दकबाशेद कहा। अन्तमें जब दुशमनोंसे तकलीफ पहुंचने लगी और अजीमुश्शानके सिपाही जान बचानेको इधर उधर भाग गये तो राजा दयाबहादुर नागर और राजा मोहकमसिंह बहादुरने अपनी अपनी फौज समेत अजीमुश्शानके सामने आकर बड़े जोरसे कहा कि अब हमको वेइज्जती सहनेकी ताकत नहीं रही है हम जाते हैं और लड़ते हैं। हजरत अगर हमारी खबर लेना मुनासिब समझें तो लें, नहीं तो हमें यह भी उम्मीद नहीं है। मगर उसने फिर वही निकम्मा जवाब अन्दकबाशेद दिया। तब तो यह दोनो बहादुर जो भला बुरा उनकी जबान पर आया वेधड़क कह कर दुशमनों पर जागिरे और उनको भगाकर उस ऊंची जगह पर चढ़गये जहां उनकी तोपें थीं और उन तोपोंको लेलिया। बदनसीब बादशाहसे न तो उनकी मदद बन सको और न उसने किसीको

उनके पास भेजा। वरञ्च जिन लोगोंने उनकी मददपर जाना चाहा किरावल(१) भेजकर उनको भी रोक दिया। यह हाल देखकर बहुतसे दुश्मन उन बहादुरों पर चढ़ आये और वह दोनों राजा जखमी होकर गिरे। उनके आदमी कुछ तो मारे गये और बाकी लाहोरकी तरफ भाग गये। राजा राजसिंह १०००सवारों सहित अखीर तक अजीमुश्शानके साथ रहा और जब वह हाथी समेत रावी नदीमें डूब गया तो इसने भी अपना रास्ता लिया।

महाराजा राजसिंहजी अच्छे कवि थे। कविताकी विद्या सेवकवृन्दजीसे पढ़े थे जिनकी सतसई प्रसिद्ध है। इनकी कविता भी वृन्दजीकी कवितासे मिलती है। इनके बनाये दो ग्रन्थ सुननेमें आये हैं। एक बाहुविलास दूसरा रसपायनाय, बाहुविलासमें तो श्रीकृष्णजीके कन्सको मारने और जरासन्धको पराजित करनेका वर्णन करके वीररस खूब दरसाया है और रसापायनायमें अविविक्तन और विकवेन नाम दो सखियोंका संवाद लिखकर नायकोंके गुणावगुण दिखाये हैं परन्तु मुझे उनका यह एकही पद मिला है—

ए अंखियां प्यारे जुलम करैं।
यह महरेटी लाज लपेटी झुक झुक झूमैं झूम परैं।
नगधर प्यारे होउ न न्यारे हाहा तोसौं कोटि टरैं।
राजसिंहको स्वामी श्रीनगधर बिन देखे दिन कठिन परैं॥१

महाराजा सांवतसिंह (नागरीदासजी)॥

यह बैशाख सुदी ५ संवत् १८०५ को अपने बापका मरना सुनकर दिल्लीमें गद्दी पर बैठे। वहां तीन चार वर्षसे पिताके भेजे हुए जोधपुरके महाराजा अभयसिंहजीकी नालिश करनेको गये थे। उन्होंने जोर डालकर सरवाड़का परगना इनके छोटे भाई बहादुरसिंहजीको दिला दिया था।

इधर बहादुरसिंहजी भी बैशाख सुदी ३ को कृष्णगढ़में गद्दीपर बैठ गये थे। सांवतसिंहजीने यह हाल अहमदशाह बादशाहसे

(१) चोबदार।

अर्ज करके कुछ बादशाही फौज अपने साथ ली और कृष्णगढ़को कूच किया। कृष्णगढ़के पास दोनो भाइयोंमें लड़ाईहुई जिसमें बहादुरसिंहजीने फतह पाई और सांवतसिंहजी दिल्लीको लौट गये। कई वर्ष तक उद्योग करते रहे मगर बादशाहकी कमजोरीसे कुछ मदद न मिली। इधर जोधपुरवाले पहलेहीसे बहादुरसिंहजीके पक्षमें थे। इसलिये सांवतसिंहीजी दिल्लीमें रहनेसे काम न निकलता देखकर मरहठोंको मदद लेनेके लिये दक्षिणको रवाने हुए। जब वृन्दावनमें पहुंचे तो हरिदास नाम एक वैष्णवने उनसे कहा कि अब आपको राज मिले ऐसा योग नहीं है और अवस्था भी आपकी पचाससे ऊपर होगई है इस वास्ते भजन करो। अपने कुंवरको राज्यका उद्योग करने दो।

सांवतसिंहजी यह सुनकर आप तो वृन्दावनमें रह गये और कुंवर सरदारसिंहको जुगराजकी पदवी देकर मरहठोंके पास भेजा।

जब मरहठोंको फौजें मारवाड़में आईं तो सरदारसिंहजी भी साथ थे। सिन्धियाने मारवाड़का आधा राज्य महाराजा विजयसिंह(१)जीसे रामसिंहजीको दिलाकर रूपनगरको आघेरा। तब बहादुरसिंहजीने सरदारसिंहजीको राजी करके आधा राज्य कृष्णगढ़का बांट दिया जिसमें सरवाड़ फतहगढ़ और रूपनगरके तीनों परगने शामिल थे। सांवतसिंहजीने वृन्दावनसे आकर आश्विन सुदी १० संवत् १८१४ के दिन सरदारसिंहजीको गद्दी पर बिठाया। वह उनके जीतेजी तो जुगराजही कहलाते रहे मरे पीछे संवत् १८२१ से महाराज कहलाने लगे। इनका देहान्त बापसे दोही वर्ष पीछे संवत् १८२३ में बैशाख बदी अमावसको हुआ। सन्तान न होनेसे महाराज बहादुरसिंहजीने अपने पाटवी कुंवर बिड़दसिंहजीको इनको गोद देदिया था जिससे बहादुरसिंहजीके मरे पीछे संवत्

(१) विजयसिंहजी बखतसिंहजीके बेटे थे। बखतसिंहजीने अपने भाई अभयसिंहजीके बेटे रामसिंहजीसे जोधपुरका राज संवत् १८०८ में छीन लिया था।

१८३८ में कृष्णगढ़ और रूपनगरके दोनों राज्य एक होगये।

सांवतसिंहजीको राज्य नहीं मिला बापके जीतेजी जो उन्होंने राज्यका काम किया था वही उनका राज्य था। पीछे वह वृन्दावनमें रहे और जो कभी कभी रूपनगर या कृष्णगढ़में आजाते थे तो दिल नहीं लगता था शीघ्रही लौट जाते थे। अन्तिम बार यह कवित्त कहकर गये थे फिर नहीं आये—

ज्यौं ज्यौं इत देखियत मूरख विमुख लोग
त्यौं त्यौं व्रजवासी सुखरासी मनभावैं हैं।
खारि जल छीलर दुखारि अन्ध कूप चितै
कालिन्दीके कूल काज मन ललचावैं हैं।
जेती इहॅं बीतत सो कहत न बनत बैन
नागर न चैन परै प्राण अकुलावैं हैं।
थोहर पलास देख देखके बबूल बुरे
हाय हरे हरे वे कदम्ब सुध आवैं हैं॥१॥

जब भक्ति करते करते उनको ज्ञानकी प्राप्ति हुई और उन्होंने देखा कि वह किस उच्च पदको पहुंचे हैं जिसके आगे कृष्णगढ़का राज्य कुछ नहीं है तो अपने भाईका बहुत गुण माना और यह पद उनको लिख भेजा—

यह संसार भुरटका भारा सिरसे तैं उतराया।
बादरियेने नागरियेको भक्तितख्त बैठाया॥१॥

कहते हैं कि वह साधुवृत्तिमें रहते थे। उन्होंने सरदारसिंहजी को राज्य देकर वैराग्य लेलिया था। अपना नाम नागरीदास भी इसी कारण रखा था। परन्तु उनकी बनाई कई पुस्तकोंके देखनेसे पाया जाता है कि उनका नागरीदास नाम लड़कपनसेही था। विहारचन्द्रिकामें वह स्वयं लिखते हैं—

दोहा—सतरेसे अठ्यासिया संवत सावण मास।
नवविहार यह चन्द्रिका करी नागरीदास॥१॥

इसी तरह भक्तिसार, पारायणप्रकारविधि, [illegible], फागविहार,

जुगलभक्तिगुणविनोद, तीर्थानन्द और वनजनप्रसन्नादिमें भी नागरीदासही नाम है।

नागरीदासजीकी बनाई हुई किताबें जो ८० के लगभग हैं सब प्रेम और भक्तिसे भरी हुई हैं। उनसे प्रतीत होता है कि राज्य छूटनेसे पहलेही वह इस रंगमें डूबे हुए थे। वह राधाके उपासक थे इससे उन्होंने अपना दूसरा नाम नागरीदास रख लिया था।

इन्होंने तीर्थ यात्रा भी बहुत की थी यह बात तीर्थानन्दके सिवा दूसरे ग्रन्थोंसे भी सिद्ध होती है। जैसे कि फागविहारमें लिखाहै—

वर्ष अष्टदस सतजु पुनि अष्टवर्ष मधु मास।
ग्रन्थ गंग तट कृष्ण पख कियो नागरीदास॥२॥

और जब युगलभक्तिविनोद समाप्त हुआ तब आप कमाऊंके पहाड़ोंकी हवा खारहे थे जो उसी ग्रन्थके इन दोहोंसे निश्चय होता है—

अष्टादस सत अष्ट पुनि संवत् माघ सुमास।
जुगल भक्ति गुन ग्रंथ यह कियो नागरीदास॥१॥
निकट कमाऊं पर्वतन विकट विटपकी भीर।
तहां ग्रंथ रचना भई नदी कौसिकी तीर॥२॥

कविताका अभ्यास नागरीदासजीको युवावस्थासेही था। उन्होंने मनोरथमंजरी ग्रन्थ संवत् १७८० में बनाया था जब उनकी अवस्था २४ वर्षकी थी।

नागरीदासजीकी कविता बहुत रसीली है जिसके सुनतेही चित्त प्रसन्न होजाता है और मनमें आनन्दका समुद्र लहरें मारने लगता है।

जोधपुरके महाराजा मानसिंहजी फरमाया करते थे कि कविता तो हम भी वर्षोंसे करते हैं पर नागरीदासजी बाबाकीसी रचना तो अभी तक हमसे न बनी। यह सुनकरही महाराजाके गुणराज(१) ब्रह्मदत्तजीने यह दोहा कहा था—

(१) गुणराज पदवी थी।

नागरि गौरव इस्क मधि राग बहादुर राज।
ब्रजनिधि गौरव अर्थ बिच रस गौरव रसराज॥

भावार्थ इसका यह है कि नागरीदासजी प्रेममें पूरे हैं। राजसिंहजी उनके पिता और बहादुरसिंहजी उनके भाई रागोंमें निपुण हैं क्योंकि वह कामोद, हिण्डोल और देवगन्धारादि संकीर्ण राग अच्छे गाते थे। ब्रजनिधि जयपुरके महाराजा प्रतापसिंहजी थे अपनी कवितामें अर्थ अच्छा लाते थे और रसराज अर्थात् महाराजा मानसिंहजी रसोंमें अच्छे हैं।

नागरीदासजीका जीवनचरित सुना है कि सरदारसुयशमें सविस्तर लिखा है पर वह ग्रन्थ मेरे देखनेमें नहीं आया। यह जो लिखा है जोधपुर और कृष्णगढ़के ऐतिहासिक दफतरोंसे खोजकर निकाला है।

नागरीदासजीका देहान्त भादों सुदी ३ संवत् १८२१ को वृन्दावनमें हुआ था।

अब कुछ रसीली कविता नागरीदासजीकी लिखी जाती है। वह डिंगल और पिंगल दोनो प्रकारकी कविता करते थे। डिंगल भाषा भी उनकी पिंगलकी तरह सरल और सरस थी। उनके भाई फतहसिंहजीने गौड़ोंको मारकर विजयगढ़ लिया था और फिर उसका नाम बदलकर फतहगढ़ रखा था। जब यह फतहगढ़ सरदारसिंहजीके बांटमें आया और नागरीदासजी उधर होकर निकले तो फतहगढ़ देखकर यह दोहा कहा—

फतो फतहगढ़ आइयो राज करण राठौड़।
गौड़ां सूं धरती गई गया धरां सूं गौड़॥

और पिंगल भाषा इनकी पहलेसी अपने देशियोंसे अच्छी थी। फिर ब्रजमें रहनेसे और भी संझ गई थी।

फागुनविहारसे।

देवनके औ रमापतिके दोऊ धामको वेदन कौन बड़ाई।
शंखरु चक्र गदा पुनि पद्म स्वरूप चतुरभुजकी अधिकाई।

अमृत पान विमानन बैठबो नागरके जिय नेक न भाई।
स्वर्ग वेकुण्ठमें होरी जो नाहीं, तो कोरी कहाले करें ठकुराई।
गांस गसीली ये बातें छुपाइये इस्क न गाइये गाइये होलियां।
गेंद बहाने न वीरा चलाइये खूबे गुलाल उड़ाइये झोलियां।
लोग बुरे चतुरे लखि पावेंगे दाबे रहो दिल प्रीति कलोलियां।
पाय परौं जो डरो टुक नागर हाय करो जिन बोलियांठोलियां॥२

पावसपच्चीसीसे।

भादोंकी कारी अंध्यारी निसा झुकि बादर मन्द फुही बरसावत।
स्यामाजू आपनी ऊंची अटापे छकी रसरीति मलारहि गावत।
ता समै नागरके दृग दूरतें चातक स्वातिकी मौज मचावत।
पौन मया करि घूँघट टारि दयाकर दामिनी दीप दिखावत॥१

इश्कचमनसे।

इश्क उसीकी झलक है ज्यों सूरजकी धूप।
जहां इश्क तहां आप है कादिर नादिर रूप।
कहूं किया नहिं इश्कका इस्तेमाल संवारि।
सो साहिबके इश्कका कर क्या सके गंवारि।
सब मजहब और इल्म सब सबै ऐशके स्वाद।
एक इश्कके असर बिन ऐसेही बरबाद।
आया इश्क लपेटमें लागी चश्म चपेट।
सोही आया खलकमें और भरैया पेट।
जरबाजी बिन खलकमें काम न संवरै कोय।
एक इश्कबाजी अरे जांबाजीसे होय।
सीस काटके भूधरे ऊपर रक्खे पाव।
इश्कचमनके बीचमें ऐसा होतो आव।
जिन पांवोंसे खलकमें चले सो धर मत पाय।
सिरके पांवोंसे चले इश्कचमनमें आय।
कोई न पहुंचा वहां तलक आशिक नाम अनेक।
इश्कचमनके बीचमें आया मजनं एक॥

फुटकर कवित्त ।

गहिवो अकासनको लहिवो अथाह थाह
अति विकराल व्याल कलिको खिलायवो ।
ढाल तरवार औ तुपक्क पर हाथ वान
गज मृगराज दोनु हाथन लरायवो ।
गिरतें गिरत पंचज्वालामें जरत पुनि
कासीमें करोत तन हिममें गरायवो ।
विखम बिख पीवो कुछ कठिन न नागर कहै
कठिन कराल एक नेहको निभायवो ॥१॥

कहूं काच चूनरी सितारेदार सोई नभ
अंग आभा सहज प्रकास सांझ धारी है ।
मनिगन भूखनकी दीपक जगे है जोत
मोतिनकी आभा महताब उनहारी है ।
फूलझरी हासन निवास महा मोहनीके
कुंजन बिहार चकचूंधी विसतारी है ।
और ठौर दीपककी दुतितें दिवारी होत
नागर विहारीके दिवारी नित प्यारी है ॥२॥

सवैया ।

कामघटा उलटी घटमें नित पीतमको चित चावत है ।
कवि नागर सोच विचार कहै बुग पावस रूप मनावत है ।
भूखन भौन तज्यौ सब कामनि फूलन्ह सेज बिछावत है ।
अब रावत मोह विदा करदो घर कामनो काग उड़ावत है ॥

कवित्त ।

वागमें समाज साज राग रंग धाढ थयौ
आनके इकट्ठो भयो संग सौ सहेली को ।
आभूखन फूल पान दयो तुम नेह जान
ताहिमें न राख्यो मान ...

जोबनकी जोराअत देखनकुं कोरा कहूं
जैसे तन तोरा मोहि नागर नवेलीको ।
औसर चुकाय हार देन(१) लागे मोतिनको
काल क्यों न दयो कान चौसरो चमेलीको ॥

सवैया ।

हंस हेर रही तिय पीतमको लखि चूंपन चूंपके पुञ्ज बढ़े ।
उपमा दसनानको सोधत नागर और न पावे विचार मढ़े ।
मुख मंजुल कंज सुवासत है मधुपावली बातन घाट कढ़े ।
सुनि आये हैं कीरति कानन हैं जनु जेंगन भौंरन पीठ चढ़े ॥

नागरीदासजीके ग्रन्थोंका संग्रह नागरसमुच्चयके नामसे छपचुका है । उसमें इतने ग्रन्थ हैं—

वैराग्यसागर ।

१ भक्तिमगदीपिका संवत् १८०२, २ देहदशा ३ वैराग्यवटी ४ रसिकरत्नावली सं० १७८२, ५ कलिवैराग्यवल्ली सं० १७९५, ६ अरिल्लपचीसी, ७ छूटकपद, ८ छूटकदोहा, ९ तीर्थानन्द सं० १८१०, १० रामचरितमाला, ११, मनोरथमंजरी, यह ग्रन्थ सं० १७८० में बना(२), १२ पदप्रबोध माला, १३ युगलभक्तिविनोद सं० १८०८ १४ भक्तिसार सं० १७९९, १५ श्रीमद्भागवत पारायणविधि प्रकाश सं० १७९९, १६ ब्रजलीला ।

श्रृङ्गारसागर ।

१७ गोपीप्रेमप्रकाश १८ पदप्रसंगमाला १९ ब्रजवैकुण्ठ तुला सं० १८०१ २० ब्रजसार सं० १७९९ २१ बिहारचन्द्रिका सं० १७८८ २२ भोरलीला २३ प्रातरसमंजरी २४ भोजनानन्दाष्टक २५ युगलरसमाधुरी २६ फूलविलास २७ गोधन आगम २८ दोहतानन्दअष्टक २९ लगनाष्टक ३० फागविलास ३१ ग्रीष्मविहार ३२ पावसपचीसी ३३ गोपीवैनविलास ३४ रासरसलता ३५ रैनरूपारस ३६ सीतसार

(१) देत आज मोतिनको ।

(२) इससे पहलेका बना कोई ग्रन्थ नहीं है ।

३७ इश्कचमन ३८ छूटकदोहा मजलिसमण्डन ३९ रासअनुक्रमके दोहे ४० अरिल्लाष्टक ४१ सदाकी मांझ ४२ वर्षाऋतुकी मांझ ४३ होरीकी मांझ ४४ शरदकी मांझ ४५ श्रीठाकुरके जन्मउच्छवके कवित्व ४६ श्रीठाकुरानीजीके जन्मउच्छवके कवित्व ४७सांझीकेकवित्व ४८ सांझी फूलबीन जिसमें संवाद अनुक्रम है ४९ रासके कवित्व ५० चांदनीके कवित्व ५१ दिवारीके कवित्व ५२ गोवर्द्धन धारणके कवित्व ५३ होरीके कवित्व ५४ फागखेलसमय अनुक्रम ५५ वसन्त वर्णनके कवित्व ५६ फागविहार सं० १८०८ ५७ फागगोकुलाष्टक ५८ हिण्डोराके कवित्व ५९ वर्षाके कवित्व ६० छूट कवित्व ६१ वनविनोद सं० १८०९ ६२ बालविनोद सं० १८०९, ६३ सुजानानन्द सं० १८१० ६४ रासअनुक्रममे कवित्व ६५ निकुञ्जविलास सं०१७९४ ६६ गोविन्द परचई।

पदसागर।

६७ बनजन प्रशंसा सं०१८१९ ६८ पदमुक्तावली ६९ उत्सवमाला ७० रसिकविहारीजीके पदोंका समूह।

काशीनिवासी बाबू राधाकृष्णदासजीने जो सूची अपने बनाये हुए नागरीदासजीके जीवनचरितमें दी हैं उसमें इतने ग्रन्थोंके नाम अधिक हैं—

१ सिखनख २ नखसिख ३ चरचरियां ४ रेखता ५ बेनविलास ६ गुप्तरस प्रकाश।

महाराजा बहादुरसिंहजी ॥

यह महाराज नागरीदासजीके छोटे भाई थे। उनकी गैरहाजिरीमें गद्दी पर बैठ गये थे। इनका रागमें बहुत अभ्यास था। दो दो और तीन तीन तुकोंके ख्याल और टप्पे अच्छे बनाते थे। जिनमेंसे कुछ यह हैं—

पद राग खंभायची।

अविचल रहोजी महाराज जो लाडीजी थांके।

दोहा।

हाहा बदन दिखाय दृग सफल करैं सब कोय।
रोज सरोजनिके परैं हंसी ससीकी होय ॥ १
दुलहिन बदन दुरात हो क्यौं सकुचत सुकुमार।
सब देखन आतुर भई चातुर पट निरवार ॥ २
धूंघट पट खोल्यो सखी मोरी दृग लटकाय।
मनोमदन ससि मीनकं डारी जाल सुलाय ॥ ३
नव दुलहा नव दुलहनी नूतन नेह सुहाग।
नयो महल नव सेज पर नव नव उलह्यो भाग ॥ ४

पद।

अलबलिया पे चारीं बनो प्यारो लागै हो भाभीजी म्हाने।
रंगीलो सुघड़ बनो म्हांने प्यारो लागै
अब छबि कहूं थाने हो भाभीजी म्हाने।

महाराजा बिड़दसिंहजी।

यह संस्कृत भाषाके बड़े पण्डित और कवि थे। अरबी फारसी भी खूब पढ़े थे। इन्होंने गीतगोविन्द पर दो टीकायें बनाई हैं। एक बड़ी और दूसरी छोटी। बड़ीका तो यह हाल है कि उसका अर्थ करते बड़े बड़े पण्डित भी धोखा खाजाते हैं। उसमें एक शब्द दूसरी बार नहीं आया है क्योंकि महाराजने बावन कोष आगे रखकर यह ग्रन्थ बनाया था इससे कठिन भी होगया। दूसरी टीका सरल और सुगम है। इन टीकाओंमें कहीं कहीं कुरानकी आयतोंका भी प्रमाण दिया है। और भी कई ग्रन्थ इनके बनाये सुने गये हैं। पर मुझे यह चार श्लोक मिले हैं।

यत्सहितो गोपीनां हृदयां भोधौ सदा क्रीडां कुरुते।
भावतरंगैर्जयति हरिरर्ध मंगंसा ॥१॥
यद्रूपस्मरणाहित संस्कारः कामनीकांतः
भजतिजितेन्द्रियता यः पदं हरिः सा सदा जयति ॥२॥

हरतिहरेरीयचेतो यथा तथा नो हरिर्यस्याः
तत्क्षणभेदसहिष्णुः सावृषभानोः सुता जयति ॥३॥
भावतनौ भावात्मस्थिता स्वभावे न भविता ।
सततं श्रीवल्लभाभिधाने तद्रूपावा सदा जयति ॥४॥

भूप कल्याण महाराजा कल्याणसिंहजी ।

यह सरदारोंके बखेड़ेके कारण अधिक दिल्लीमें रहा करते थे। एक दो वार महाराजा मानसिंहजीके समयमें जोधपुरमें भी आये थे। बड़े कबि और पण्डित थे। यह पद उनका बनाया हुआ है—

बधाई ।

आनन्द बधाई माई नन्दजूके द्वार ।
ब्रह्मा विष्णु रुद्र धुन कीनी तिन लीनो अवतार ।
जनमतही घर घर प्रति लच्छी बांधत बन्दनवार ।
भूपकल्याण कृष्ण जन्महिं पें तन मन कीनो वार ॥

महाराजा पृथ्वीसिंहजी ।

महाराजा पृथ्वीसिंहजी भी अपने पूर्वजोंकी भांति बड़े अच्छे राजा और परम वैष्णव थे। कभी कभी कुछ कविता भी कर लेते थे। यह वल्लभ सम्प्रदायकी वंशावली उन्हींकी बनाई हुई है—

श्रीमहाप्रभू वल्लभ प्रगटे जिन सुत बिट्ठलनाथ ।
जिनके श्रीगिरधरजी प्रगटे उनके गोपीनाथ ॥ १
श्रीप्रभुजी जिनके भये फिर रनछोड़ सुजान ।
उनके जीवनजी भये बिट्ठलनाथ प्रमान ॥ २
उन सुत वल्लभजी भये फिर श्रीविट्ठलनाथ ।
करि करुणा या कलि महो मोकूं कियो सनाथ ॥ ३
जिनके सुत रनछोड़जी, हैं कुंवरन सिरमोर ।
इनको वंश बधो बहुत यह असीस करजोर ॥ ४

छठी धारा।

बूंदी।

बूँदी राज्य देवाजी हाडाने स्थापित किया। हाडा चौहान वंशकी एक शाखा हैं। देवाजीके वंशधरोंने वीरतामें बड़ा नाम पैदा किया जिससे "गाडा टले हाडा नहीं टले" की कहावत चली है।

राव देवाजीसे लेकर वर्तमान महाराव राजाजी तक बूँदी राज्य की राजावली वंशभास्करमें लिखी है। वह इसी वंशके इतिहासका है जो स्वर्गवासी महाराव राजा रामसिंहजीकी आज्ञासे निर्माण हुआ है।

नं०	नाम	जन्मसंवत्	राज्यसंवत्
१	राव देवाजी	......	१२९८
२	समरसिंहजी	......	१३००
३	नापाजी	......	१३३२
४	हामाजी	......	१३४३
५	बरसिंहजी	......	१३८३
६	बैरीशालजी	......	१४१८
७	भांडाजी	......	१४९० *
८	नारायणदासजी	......	१५४४
९	सूरजमलजी	......	१५८४
१०	सुरतानजी	......	१५८८
११	सुरजनजी	......	१६११

* भांडाजीके समय तक संवत सही नहीं जाने जाते कुछ भूल पाई जाती है जिसके लिखनेका यह समय नहीं है।

१२	राव भोजजी	......	१६३२
१३	राव रतनजी	......	१६६४
१४	कुंवर गोपीनाथजी	१६५६	......
१५	शत्रुशल्लजी	......	१६८८
१६	भावसिंहजी	१६८०	१७१५
१७	अनिरुद्धसिंहजी	१७२३	१७३८
१८	बुधसिंहजी	......	१७५२
१९	श्रीजी उम्मेदसिंहजी	१७८६	१८०५
२०	अजीतसिंहजी	१८०७	१८२७
२१	विष्णुसिंहजी	१८२६	१८३०
२२	महाराव राजा रामसिंहजी	१८६८	१८७९
२३	महाराव राजा श्रीरघुवीरसिंहजी	१९३६	१९४६

यह सब श्रीमान अपने अपने समयमें विद्या और कविताकी उन्नति करने तथा कवियोंको आश्रय देनेमें सतत् तत्पर थे। राव राजा बुधसिंहजी, रामसिंहजी और विष्णुसिंहजी तो स्वयं भी बड़े कवि थे जिनकी कविताएं और जीवनियां हम आगे लिखते हैं। इस काममें हमको श्रीदरबार बूंदी और कवि राव रामनाथसिंहजी से अच्छी सहायता मिली है जिसके हम बहुत आभारी हैं।

राव राजा बुधसिंहजी।

महाराव राजा बुधसिंहजीका जन्म संवत् १७४२ में हुआ और उनके पिता राव राजा अनिरुद्धसिंहजीका स्वर्गवास होने पर संवत् १७५२ में दस वर्षकी अवस्थामें उनका राज्याभिषेक हुआ। संवत् १७५३ में इनको औरंगजेबने दिल्लीमें अपने पुत्र शाहआलमके पास रखा। आपने अपने सदाचरण और शूरता आदि गुणोंसे शाह आलमको प्रसन्न किया था। इसके बदलेमें इनको टोंकका परगना औरङ्गजेबकी तरफसे मिला। उन्हीं दिनोंमें औरंगजेबने शाहआलमको काबुलकी तरफ युद्धके लिये भेजा। बुधसिंहजी साथ थे। इनकी बहादुरीसे शाह आलमको

जीत हुई। एक दिन बुधसिंहजी शाहआलमके दरबारमें पधारते थे उस समय तीसरी ड्यौढ़ीमें बादशाहके किसी मुसलमान उमराव ने उनसे कुछ कटुवचन कहा। इस पर क्रुद्ध होकर उन्होंने कटारी के एकही हाथसे उसे यमपुर भेज दिया। इस वृत्तान्तको सुनकर शाहआलमने कुछ सोचा और बुधसिंहजीको निर्दोष कहा। उधर दक्षिण औरङ्गाबादमें औरङ्गजेबका देहान्त होगया और शाहआलम की अनुपस्थितिमें छोटा पुत्र आजमशाह तख़्त पर बैठ गया। उस की तरफ काटादिके बहुत(१) से राजा मिले थे इधर औरंगजेबका मृत्यु-संवाद काबुलमें सुनकर शाहआलम जिसे बहादुरशाह और मुअज्जम भी कहते हैं जल्दीसे सेना लेकर आया। इसकी तरफ केवल बुधसिंहजीही थे। इन्हींको सेनापति बनाकर शाहआलमने भेजा। जाजव नाम स्थानमें भारी युद्ध हुआ। वहां बुधसिंहजीने अपनी सेनासे दूनी सेनाको परास्त करके आजमको पुत्र सहित मार डाला। इस पर प्रसन्न होकर शाहआलमने इनको महाराव राजा की पदवी पांच हजारी मनसब बहुतसा भूषण और गागरून, शाहा-बाद, शेरगढ़, बड़ौदा, छबड़ा आदि ५४ परगने दिये।

फिर जब शाहआलमके पोते फर्रुखसियर बादशाहको उसके वजीर सैयद अबदुल्लहखां और सेनापति सैयद हुसैनअलीखांने तख़्त से उतारना चाहा तो इन्होंने उनको इस अनुचित कामसे रोका। जब उन्होंने नहीं माना तो यह उनसे लड़े और दिल्लीमें अपना निर्वाह न देखकर बूंदी चले आये। पीछे सैयदोंने फर्रुखसियरको पकड़कर मार डाला और दूसरा बादशाह तख़्त पर बिठा दिया।

बुधसिंहजी कवि थे। इनकी कविता बहुत सुन्दर और चुट-पुटी होती थी। जब सैयदोंसे लड़े थे तो यह कवित्त कहा था—

ऐसी ना करी है काहू आजलौं अनैसी जैसी
सैयद करी है ए कलंक काहि चढ़ैगो।

---

(१) इतर भूप हाज़िर अखिल इक उदैपुर टारि। (वंशभास्कर)

दूजेको नगारे बाजै दिल्लीमें दिलीश आगे
हम सुनि भागें तो कविन्द कहा पढ़ेंगे ।
कहै राव बुद्ध हमें करने हैं युद्ध खासि
धर्ममें प्रसिद्ध जे जिहान जस मढ़ेंगे ।
हाडा कहवाय कहा हारि करि कढैं तातें
झारि समशेर आज रारि करि कढेंगे ॥ २

जोधपुरके महाराजा जसवन्तसिंहजीके मरतेही औरङ्गजेब बादशाहने संवत् १७३६ में मारवाड़ अपने राज्यमें मिला लिया था । उसे २७ वर्ष पीछे महाराजा अजीतसिंहजीने औरङ्गजेबके मरने पर बादशाही हाकिमोंसे छीनकर अपने अधीन किया । तब महाराव राजा बुधसिंहजीने महाराजा अजीतसिंहजीके इस बड़े कामकी प्रशंसामें यह सवैया कहकर भेजा था—

दैंत दिलीपति मीर महा जल सैद हिलोरनतैं अति बाढ़ी ।
हिन्दुनकी हद दाब दसौं दिस तेज तुरक्क तरंगम चाढ़ी ।
मारु महीप प्रभु अवतार ह्वै धीरज धार गही खग गाढ़ी ।
यौं कहि बुद्ध अजीत बराह ह्वै बूढ़ी धरा कमधज्जने काढ़ी ॥

फिर जब महाराजा अजीतसिंहजीका मुहम्मदशाह बादशाहसे बिगाड़ हुआ और महाराजने जोधपुरसे चढ़ाई करके सांभर और अजमेरसे बादशाही दखल उठा दिया उस समय भी बुधसिंहजीने यह सवैया कहा था—

बात कराइ कराह कहै जु मुहम्मद साह अमीरनसों ।
सरजोर भयो है मरुधर राज अजीत सबै रन बीरनसों ।
महराव* निकाल खराबकियो जिन मारि हुसैन† जुलीरनसों ।
सांभर छीन लई सो लई न टरयो अजमेरके पीरनसों ॥

महाराव राजा बुधसिंहजी दूसरे रसोंमें भी अच्छी और अनोखी कविता करते थे जिसका नमूना इस कवित्तमें देखा जाता है—

* महराबखां † हुसैनखां—यह दोनों बादशाही सरदार थे ।

कीनो तुम मान, मैं कियो है कब मान अब
कीजे सनमान अपमान कीनो कब मैं ?
प्यारी हंसि बोलु और बोलैं कैसे बुद्धराज
हंसि हंसि बोलु हंसि बोलिहौंजु अब मैं।
दृग करि सोहैं कौरि सोहैं करि जानत है
अब करि सोहैं अनसोहैं कीने कब मैं।
लीजे भरि अंक जाहि आये भरि अंक होन
काहु भरि अंक उर अंक देखे अब मैं॥

महाराव राजा विष्णुसिंहजी।

महाराव राजा विष्णुसिंहजीका जन्म सं० १८३० में हुआ और इसी वर्ष ज्येष्ठ बदी ११ को अपने पिता महाराव राजा अजीतसिंह जीके २१ वर्षकी अल्प अवस्थामें स्वर्गवास होने पर अपने पितामह उम्मेदसिंहजीकी आज्ञासे जो पुत्रको राज्य देकर वाणप्रस्थमें चलेगये थे साढ़ेचार मासकी अवस्थामें राजसिंहासनपर बिठाये गये। बालक रहे तबतक राज्यका शासन उम्मेदसिंहजीकी आज्ञासे हुआ।

इनके समयमें करनल टाड साहबके द्वारा बूंदी राज्यसे सरकार अङ्गरेजीका सन्धिपत्र हुआ था।

यह श्रीरंगजी भगवानके ऐसे अनन्य भक्त थे कि एक बेर कोटेके रास्तेमें शिकारको पधारते समय घोड़ेसे गिर गये। उसी क्षण पृथ्वीमेंसे एक हाथ निकला और उसने इन्हें थाम लिया। हाथ पर हरित वस्त्र और सोनेका कड़ा देखा गया था। उस समय मन्दिर में श्रीरंगजी महाराजके भी हरे रंगकी ही पोशाक थी।

इनको संस्कृत और भाषाकी कविताका बहुत अभ्यास था। दस हजारके अनुमान कवित्तादि इनके बनाये मौजूद हैं। उनको देखनेसे इनकी कवित्व-शक्ति और हरिपदभक्ति स्पष्ट झलकती है। सुनिये—

पूतन ज्यों पारे जमदूतनिका टारे
भवसिन्धुतैं उधारे ऐसो विरद कहाय है।

ताकी करि आसका है औरके निवास परे
राखि विसवास जाके चरण रहाय है ।
एरे मन मेरे तैं घनेरेही उपाय करे
कहे विसनेस चित्त भ्रमतें बहाय है ।
आन कित हेरे राखि नैननितें नेरे परे
भीर भट भेरे केरे श्रीपति सहाय हैं ॥ १

सवैया ।

आरतवन्त पुकार करी गज सो सुनि दौरि गये पगनामै ।
ल सवरी गनिकादिक तापर नाहिं विचार बिचारन लागे ।
मोसरो दीन दुखी न दयाधर कारन कौन नहीं अनुरागे ।
पाप विदारक हो पन पारक मो तजि तारक हारिक भागे ॥ २
जन्म दियो जगदीसहि जो जगमें जनको भख जीवन देगो ।
काहे को काहुको कीजे कुसामदि एक उही दृढ़कै बसकैगो ।
भोग करे भ्रम भूलनसों भव जो सुख नास अकाम रहेगो ।
मोहत मोह समुद्रमें मोहि सुवारन तारन हारन लैगो ॥ ३
वा हरके पद पंकजकी छबि गाइ न और कहै वनि आवे ।
मो श्रुति मांझ समाय रहे श्रुतिहु करि नैनन मांझ सभावे ।
नैननतें सुरही उरमें उरिकै धरि ध्याय अनूपम गावे ।
सो कहि कौन समाय सवै परि प्रेम पयोनिधि पार न पावे ॥ ४

कवित्त ।

परम प्रह्लादको पुकार सुनि ताही काल
करि विकराल खंभ फारि छवि छाई है ।
जिते अवतार जग व्यापित हैं बारबार
कीरतिको कला कान कलित कमाई है ।
दौरत दुवारका तैं द्रोपदी दुवार गयो
और कहा कहौं गाय सेसन सुनाई है ।
मेंरी बेर दीनवन्धु देर क्यों दयाल अब
तारन कौं तारन कौं ... है ॥

नृसिंहका सवैया।

चाटत है रसना प्रहलादको फाटत है तिहूँ कालकी छाती।
देवनको गन दूरितें देखत आवत नाहिं लखे रुखराती।
श्रीनरसिंह रुखानलको झार अन्तके पावकतें लखि ताती।
दासको ओर निहारि निहारिकै आपहितें वह सेज सिराती॥ ६

रामचन्द्रको कविता।

श्रीरघुवरके चरन जुग नील बरन अरबिन्द।
सरन पर्‍यौ पीवत सदा मन मलिन्द मकरन्द॥ ७

कवित्त।

राजा रामचन्द्रजुके जसको बखान करो
गावैं शिव शेष विधि वेदन विधानसैं।
शीलताई धीरताई उज्जल विवेकताई
रूपता रुचिर राजै गुनकै निधानसैं।
बखत बिलन्द राजा दशरथनन्द तेरो
पूरन प्रकाश फैल्यो दशहूदिशानसैं।
हरसो हरासो हिमगिर हार हीरनसो
सोहत सुदश हंस चंद्र मुकतानसैं॥ ८

सवैया।

नैननि तै निज नूर निहारनको नित नेम लियो निरधारन।
रावरेको रसना गुन गान सदा मनि मन्ल सदातन तारन।
श्रीरघुनाथ हौं रावरो दासहूं आस न आन करौं किहिकारन।
पारिवेको परि पूरन राखियो पामर एक पर्‍यौ दरवारन॥ ९

कवित्त।

राजा रामचन्द्र तेरो द्वारतैं दुरन्द कढै
बढ़े सुण्डा दण्ड ह्वदपुर अलकेसके।
झूलनि पै फूलनके भाय तरे मोतिनके
जोतिन समेत हीरा पन्ना छवि वेसके।
कञ्चन कलित वेवलितगन घूघरानि
सुन्दर ललित है चलत छवि बेसके।
मचिक मचिक जात भूम पग भारतैं ज्यौं
लचकि लचकि जात सारे फन सेसके॥ १०

सवैया ।

श्रीरघुनाथकी सेन सजो सुबजी सुनि नौबति ह्वै घन छीनो ।
घोरनकी खुरतारनि खुन्दि महीतलको मनु मर्दन कीनो ।
धूरितें पूरि सपूरि दशोंदिशि अम्बरमें मिलि डम्बर कीनो ।
सैल कढ़े सुर गैल न पावत रोकि विमाननको मग दीनो ॥ ११

लंक प्रमानको आदि मिला नहिं तीर जलासयके उतरायो ।
देखि अगाध भयान महादल भाल कपीसनको हहरायो ।
रामको नाम लिख्यों तिन ऊपर ऊखल ले जल मांहि तरायो ।
तादिनतें वह रावरे नामको तारक मन्त्र सबै ठहरायो । १२

देव अदेव सबै मिलि मण्डित पण्डित वेद पढ़ैं बढिन्यारै ।
जोग मुनीजन लोग करै तजि भोगनको परिसी गुनगारै ।
तीरथ जाय प्रयाग गया गुन औगुन जोर हिये अंग भारै ।
राम बिना सब काम अकाम सकाम निवाम किये नरसारै ॥१३

पैदल वारन पावत पारसु यौ रथ जाल मची मग साजै ।
घोरन दौरन कोरिनकी कहि आवत जातन बातन लाजै ।
जात निसान दिमान उड़ै घन ज्यौं बम बंब चले चल बाजै ।
जानकी व्याहन जात जहां जिन रामलखे गज राज बिराजै ॥१४

कवित्त ।

राम महाराज शिरताज सैं कहत बाजि
नावै शीश आज मिल राजनके आप है ।
धौंसनकी धमक घमक कर घोरनकी
गाय मति कौन कोयो सेसन सलाप है ।
ताको गुन गंग औ गिराहुते न गायो जाय
चतुर नरन कैसे जपत सुजाप है ।
मेरे जानि सुजस हजारही सुखन पै
अपार सुख रावरे प्रतापको अताप है ॥ १५

सवैया ।

भालु कपीसकी सेन चढ़ी तिन मध्य मनोहरके लर दो है ।

कूदि करै किलकार महा जुध जीतनको जिय मांझ उछो है।
भीलको भामिनो नैन निहारि कह्यौ किन कन्त कहा अब होहै।
अस्त्र न सस्त्र न वस्त्र विहीन ये भूतसे जात भयानक को है॥ १६

कवित्त।

दशरथनन्द महाराजा राजा रामचन्द्र
तेरो जस चन्द रह्यो अवनि प्रकास कै।
ताको तौ किरनि करि कलित ललित भये
सेतह्वै सकल अंग वसन विलास कै।
मेरु मैनाक गन्धमादन हिमाचल ह्वै
विन्ध्यके सहित सब भासै इकभास कै।
दीस तन न्यारे सब एकसे निहारै गिरि
हेरि हेरि हारे हर भोरे कैलासकै॥ १७

काहूके कुमावत सपूत पूत काहूके सु
आवत है माल महा मुलकन गांमके।
केई दौर चाकरी करै है केई बैठे घर
भोजन करत भाग फूले फल नामके।
ऐसे बहु बिमल विलोकत विहवल भयो
मनमें गह्यो है एक अवर न कामके।
जगमें न जाचिहौं जियत जन प्रति प्रति
मेरे धन धाम धरा पदजुग राम के॥ १८

सवैया।

ले पितु सासन शत्रु विनासन देव निरासन आस सधाये।
जो बन जाय कियौ करुणाकर दै सुधि बांदर रीछ बुलाये।
जानकी लच्छन राम ततच्छन वेद विचच्छन गीतन गाये।
भार उतारिय है भुवको भलयौं रघुवीर विजै करि आये॥ १९

कवित्त।

राजा रामचन्द्र तेरी तेजनिकी ताप आगे
वैरी बल हीन ह्वै बसत बदिरानमें।

तिनहूकी रानी महारूपकी निधानी काहू
जात न बखानी गनियतु इन्दिरानमें।
पायन पयादी साहिजादीसी फिरति बन
गादीकी बिसरि बैठी घास गदिरानमें।
बासन बिनाही सब सुखन सुवास तजि
बासकी बदलि बास कीने कन्दिरानमें॥ २०

कृष्णचन्द्रके सवैया।

सांझ समै सब धेनु समेटि चले बनतें हरि आवन काजै।
पायनको रज धूम चढ़ी सुचढ़ी तन अम्बरपै छबि छाजै।
मोर पखान किरीट सजे बजि यौं मुरली सुरलीन समाजै।
गोकुलके जन गैल गहैं सब आपनी आपनी आरती साजै॥ २१
बैन बजावत गावत आवत नाचत राचत राग घनेरो।
हालन गैलन गाय बिराजत ता छबि लै ब्रज आज बसेरो।
चातक ज्यौं चित चोंप रहै बरसे परसे कवि आखिन भेरो।
रूप अनूप लख्यौ सुचहै हम सुन्दर स्याम शिरोमणि केरो॥ २२
सो मुनि देव अदेवनको दुति दुर्लभ लेखन सेखन होही।
सोजसुधा वसुधा बसिके नंदराय लियो सुपियो मुख सोही।
गोकुलतें चलि गोकुल लै संग गोकुलनाथ अबै वन जोही।
लोचनतैं दुख मोचन दै मुख मोहनलालको देखन मोही॥ २३

कवित्त।

मरकत कैसो ओप ओपत अपार तन
तापै पट पीतको दुपट उरझावनो।
मोरको मुकुट औ लकुट बन मालहार
भूषन सकल विधि तन पै बनावनो।
लटकि लटकि चलै मटकि मटकि मुख
अटकि भटकि मेरी मन ललचावनो।
जमुनाके तट बंसीवटके निकट मिल्यौ
सुन्दर चटक नट नागर सुहावनो॥ २४

सवैया।

कारनकी मुनि काननमें कहितानन गानन आनि बसाई।
यौं कर चाहि वढ़ी उरमें उरिकैन मुख्यो कढि जानन चाई।
बैमन नैनन सैननकी लखि सांवरी सूरत मो मन भाई।
फन्द फस्यौ मनमोहनकै निकस्यो न गयो जवाखौं जनुजाई॥ २५

मोरकी पच्छ मनोहर शोभित लोभित मोमन देखि महाई।
माधुरता मुरलीमुखकी सुखकी जनु रासी निवास बढ़ाई।
नेह नदी उमगी न रही कुल लोककी लाज सुपाज बंधाई।
फैलि गयो परिपूरन प्रेम सुकोन अली अपने घर आई॥ २६

कवित्त।

जा दिन बुलाई सो न जान भयो मेरी माई
तोत सुन गाई सो न पाय सुख मोनिसो।
मुरक्यौं न मुररि मरोरिकै न मेरी ओर
त्यौंर कर तरल गरल दृग दोनिसो।
जावत हो पूजन महेश पै न लग्न लखि
अटक भटक आज भैरो भट होनिसो।
हरवर ह्वकै हैकि बैकि होगई री जात
सांवरो सलोनो मोतैं मान मत ओनिसो॥ २७
मिलिकै कंवेरी हो जु पूजन महेश जात
बंशीवट वाही नट आइगो अहीरको।
लखि अनुराग भयौ वेतो यह लाग भरी
कहत सुवाग भरी तोत मन धीर को।
छूटि गयो धीरज अधीरज उमडि गयौ
कहत न रह्यो आज सुधन शरीरको।
मतिको कहूंको कहूं आयकै लगैरी दोष
चित वृषभानुजाने चोख्यो बलबीर को॥ २८

सवैया।

करली लकुटी भ्रकुटी भरिकैं अनुराग रह्यो अंखियां अवरी।

तन स्यामसुजान सुप्रीतमको पट पीतहुसे छलकैं सबरी।
कटि किंकिनकी झनकार महा अरु हार रहा हियमैं फबरी।
चलि राधिके साजलखो ललना ब्रजराजकी आज छबीछबरी ॥२९

बैननमैं अरु नैननमैं मन जाय बस्यौ न तजै पल आधो।
गोकुलके कुलमैं कुलनायक कृष्ण कृपा करिकै हम पाधो।
लोककी लाज लगी न रही अब आवत कान सुन्यो सखिसाधो।
सातौहियो सुर सातौ हियोकर गावत मोहि सुहावत माधो ३०

पञ्जाबी भाषाके कवित्त।

टुक टुक गलियांनू भलोयां घरन मैं तू
भाजननूँ फोरिके करेंदा मन भांवदी।
ऐसा तेरा बप्पमैं न भया है, अनेसा तैनू
ऐसी ऐंडी बैंडी बातैं कौनै सिखलावंदी।
एरे नन्दादा तू आवन्दा भलैही मेरै
एक मेरी गल्ल तेरे जीयेनू जू भावंदी।
माखनदी चोरी तो सुहावन्दी सबनहीं नू
दिलोदी तों चौरी यार नेक न सुहावंदी॥ ३१

छोकरा अनूप तूतौ डोकरा महरदा है
नोकरा अनेक ग्वाल राखे मन भादिया।
अजब था तेरा असबाब दुनियौमैं दोला
मजब था गजबोंमैं जुलमा जादिया।
विष्णु कहि मिलता था मेरे मग हिलता था
भिलता था हाव भाव मोन सुधि सादिया।
एरे मेरे मीतते उपाय न परेंदी तैंडी
सूरति तों मैनू फेरि नैक तो दिखादिया॥ ३२

विजइ दशमी दिन करिकै सकल पन
धूपिके धवल धाम चित्रित अमन्दमैं।
झालरि सबद घण्टा झांझन झनकार ध्वनि
गावे गुनगान हरि सुनिये सबन्दमैं।

निशिमें दिपति दीपदानकी उदित जोति
निरखै सकल जग शोभा सुख मन्दमें।
एक मासलौं जे नर पूजै राधा दामोदर
तेन कोऊ आवै फिरि बाधा भव फन्दमें॥ ३३

रंगनाथजीकी सवैया।

आनको ध्यान धरौं न कवै नहिं गान करौं मुखतैं पन मेरे।
कीरति रावरी कौं सुनि कानन मोमन मानि गुमनान घेरे।
टेकर राजन काज हमैं अरुना करिकै करुनावर हेरे।
तारि अतारी दया ढर तापर ह्वौं रंगनाथ रंग्यौ रंग तेरे॥ ३४

शिवकी कवित्त।

शिवको समाज मेरे नैनन निहारयो आज
आयि व्रजराज तेरे पूजन करत हैं।
जप तप नेम व्रत यज्ञकों करत सव
अर्चन सकल वेदवानी यौं फुरत है।
तेरे ध्यान धारे ताते वेग मुक्ति पावै भजि
तिनतैं कलेश जर मूरितैं जरत हैं।
डाक बाजै डैरू रुंडमालिके करन ताकौं
रुक्मिनि सहित कृष्ण रटिबो करत हैं॥ ३५

सवैया।

भूतन भूत विभूति विभूषित भासत भास महा भयमाता।
मुण्डन माल कपालिक मण्डल काल कहै तिनसौं सव ज्ञाता।
यौं चलि संभ्रम आवति है मन जावति है हटि हेरि हराता।
जानि नजाय वहै मतिकी गति है शिव शोक अशोकके दाता।

अथ शिवाष्टक।

गंगाधरं शान्तमतीव सुन्दरं गौरीपतिं शूलधरं प्रसन्नं।
सक्रादिभिः पूजितपादपल्लवं बंदे स्तवं वक्ष्य धुना यथा धि॥ ३७
देवदेवं महादेवं शंकरं भस्म वल्लभं
प्रसन्नं गिरिजाकान्तं कर्पूरधवलं शिवं॥ ३८

पंचवक्त्रं दशभुजं धूर्जटिं नील लोहितं
हरं स्मरहरं भर्गं त्र्यम्बकं त्रिपुरान्तकं ॥ ३९
गङ्गाधरं चन्द्रभालं कर्पदीशं पिनाकिनं
पार्वतीवल्लभं शम्भुमीश्वरं परमेश्वरं ॥ ४०
महाकालं महारुद्रं भीमदेवं भयानकं
रुण्डमालं सर्पमालं मालिनं चन्द्रशेखरं ॥ ४१
षडाननं गणाध्यक्षं नन्दिकेश्वरसंयुतं
आदिरूपं नादवद्यं शिवं मंगलकारकं ॥ ४२
वृषध्वजं जटाधारं गजचर्मविराजितं
योगध्यानं योग रूपं पार्वतिप्राणवल्लभं ॥ ४३
विष्णुभक्तं सदासुक्तं निःशंकंपरमांगतिं
मुक्तिदं ब्रह्ममार्गज्ञं शिवलोक प्रदन्नमः ॥ ४४
ब्रह्महत्यादिकं पापे गुरुतल्पायुतैर्युतः ।
यः पठेदष्टकं नित्यं स पापरहितो भवेत् ॥ ४५

गङ्गाजीको सवैया ।

हेत भगीरथ लेत रहै सुख है वदि वेद पुरान विचारै ।
सागरसौं सनमन्द किते इक जानत है जस जासन हारै ।
ए गुन गंग अभंग असंक ससंक कहौ कविके कुल सारै ।
बापके पापको आप मिटावन ईशके सीस चढ़ी ढर ढारै ॥ ४६
श्रीहरिकि पदपंकजतैं जलकी चली धार सुढार ढली है ।
ह्वैशिव शीश सुमेरके ऊपर भूपर न्हात जिन्है गति ली है ।
सो जस पावन गावनको कहि आवन सोमन मांझ भली है ।
दै निज दीनन मीननकी गति आप त्यौं पाप बुझाय चली है ॥ ४७

वर्षाके कवित्त ।

पावस अंध्यार दिन रैनकी निहार नाही
फैल्यो पारावार ज्यौं चले है तमदूतकै ।
मोरनकी घोरन तै सारन सुनत कोऊ
नैननकी दौर है न जीक तनहूतकै ।

घनकी धमक देखि दामिनी दमकि सब
चमकि चमकि रति ऐसी अदभुतकै।
रसनतै रेले धारा धरनी न झले जात
आये घन झेले मानो पेले पुरहूतकै॥ ४८

वाचिकै सुनावै मोर केकी कलरव और
कूकि कूकि सारो सुक सोर करै जतियां।
घोर करै उमंडि घुमंडि घन घेर घुरि
दामिनी चिराक दरसाति मेह रतियां।
वैरी मनमोहनकी मधुरि सुसोय सुधि
धारकि धरकि उर आत जात बतियां।
मेरे जानि पीतमकी आवनकी भावन लै
पावस पठाई लै हरोल आई पतियां॥ ४९

चातक चितावै चहूंघातैं सोर और मोर
मोहि न सुहावै सब माधुर सुमन री।
प्रबल चलत पौन जुगुनू जुगत जौन
दामिनि दुतकि हौन लागै बन बनरी।
बाञ्छत पियूषतैं इतावीन विष सरूप
वासन सिंघासन अवासन तैं तनरी।
बालम विदेस तातै विरहनि मारबेको
घोर आये घन कै करोरि आये घनरी॥ ५०

होरीका कवित्त।

होरीको समाज वृन्दावनमैं निहार्‍यो आज
आये व्रजराज साज शोभाको धरतु है।
उतै आई गोरी दौरी झोरी भरि रोरी सब
सहित किशोरी रोकि मगमैं अरतु है।
उड़िके गुलालनके डंबर बरंबर ह्वै
अंबर अवनि अन्त सूझि न परतु है।
मेरे जानि भानिको न परत प्रमान कैहू
अरुन अमान ह्वै प्रकासकौं करतु है॥ ५१

आवत मैं फाग बड़भागसो अवधि चन्द
खेलतमैं लाग चित चौगुनी बहार मैं ।
केसरी सुभग सीर कुंकुम कलित नीर
मृग मद मलया मिलाय घनसारमैं ।
उडत गुलालनके डम्बर सघन घर
रचित रतम्बर भी अम्बर अपारमैं ।
झटके चढ़ति जात अटके न काहू बल
खटके पुरन्दरकी पलक हजारमैं ॥ ५२

सवैया ।

होरीमें गोरी किशोरी सबै मिलि दौरी सुपौरि पै कान पयेरी ।
हो हो के हाक करी हंसिके बसिके रसिके चसके सचयेरी ।
चन्दन चोवन चर्चित है चितयौं पिचकी करिकै झपयेरी ।
मार मची अतिही सुकुमार सुलाल गुलालतै लाल भयेरी ॥ ५३

विरहिनीका सवैया ।

चन्द भयो विषकन्द हमैं अब सूल सहेली समीर लखीरी ।
भाजन भौन भये भय भूखन भोजन भोग भले न भखीरी ।
जा छिनतैं नंदनंद लख्यो कहि तादिन तैं सब बात नखीरी ।
नैनन सैनन सीर लगी उर प्रीत नहीं विपरीत सखीरी ॥ ५४

वैराग्यका सवैया ।

वटी तरुके तर बैठिके ध्यान लगावति है निति धूरजटी ।
जटी जिनके रसना रट राम विसारत नाहिम एक घटी ।
घटी अब जात दशातनकी तकि तू न सम्हारत ताहि रटी ।
रटी तिनजे मर एक बिसो जनु जाय किये तप पञ्चवटी ॥ ५५
जन्म दियो जिन जानत है नये है सुपनो अपनो के लह्यो है ।
ताते कछू न सरे कहिं कारज काज अकाज सो हाथ लह्यो है ।
मूरि सुख्यो न रख्यो हरिकों नर मो मति माफिक जाचि कह्यो है ।
झूठमैं टूटि पर्यो निशि बासर साचैही साच तैं रूठि रह्यौहै ॥ ५६
ना व्यय लाग लगे हरिसों परसो किनतैं उपदेस दियोरे ।

मूढ भ्रम्यौ इन पै न पयौ तन लाख चतुर्विस च्यार लियोरे।
सो करता हरता वहिहै अपनी नहिं क्यौं नरताहि कियोरे।
स्वारथ भीन भयो परमारथ रे सठ कारथ जाय जियोरे॥ ५७

महाराव राजा रामसिंहजी।

इस विकराल कलिकालमें महाराव राजा रामसिंहजीके समान राजर्षि विरलेही उत्पन्न हुये होंगे। इनका जन्म संवत् १८६८ में हुआ था और यह संवत् १८७८ के श्रावण बदी १२ को साढ़े नौ वर्षकी अवस्थामें अपने पिता श्रीमहारावराजा विष्णुसिंह जीके स्वर्गवास होने पर राजसिंहासन पर विराजमान हुए थे। इन्होंने अपनी न्यायपरता दानशीलता प्रजावत्सलता दया गंभीर-तादि लोक दुर्लभ गुणावलीसे देश देशांतरमें जो कीर्ति प्राप्तकी थी सो जगत् विख्यात है। ऐसे यशस्वी राजाका इस समयमें होना कठिन है सनातनधर्म पर दृढ़ रहने सत्य बोलने विद्याका आदर करने पुरातन मर्यादाका पालन करने और मनुष्यको थोड़ेही समय में भली भांति समझनेमें महारावराजा रामसिंहजी एकही थे ऐसा कहनेमें कुछ अत्युक्ति नहीं है। संवत् १८९० के भयंकर दुर्भिक्ष में जब लोगोंको रुपयेसे भी अन्न नहीं मिलने लगा तो इन महा-राजने अपने भांडारोंसे बाजारसे थोड़े भाव पर अन्न दिलवा कर प्रजाके प्राण बचाये। राजपूतलोग अपनी लड़कियोंको जन्मतेही मार डालते थे इस कुरीतिको इन्होंने संवत् १८९३ में अपने राज्यसे बिल-कुल बन्द करदिया। अङ्गरेजी सरकारने इसके ५।६ वर्ष पीछे इसका कानून बनाया था।

संवत् १८९६ में इन्होंने पुष्करजीकी यात्राकी और संवत् १८९८ के पौष सुदी २ के दिन मथुरा वृन्दावन प्रयाग काशी गया चित्रकूट आदि बहुतसे तीर्थोंकी यात्राके लिये प्रस्थान किया। उन दिनोंमें रेलगाड़ी न थी सेना और प्रजाके हजारों मनुष्योंके साथ १८ महीनोंमें वह यात्रा पूर्ण हुई जिसमें लाखों रुपये और पृथ्वीका दान किया।

संवत् १६०४ में इनकी चेष्टासे पाटणका परगना जो दलेलसिंह जीने मरहटोंको देदिया था और मरहटोंसे अंगरेजी अधिकारमें आगया था वापिस मिला ।

संवत् १६१६ में श्रीगंगाजीकी यात्रा और संवत् १६२२में दूसरी बार काशीजीकी यात्रा की। संवत् १६२७ में दूसरीबार श्रीपुष्कर यात्राकी संवत् १६३२ में श्रीप्रयागकी यात्राकी। वहांके लोग लोभ वश होकर गौके साथ एक बड़ा निष्ठुर बरताव करते थे। वह अपनी गौके जब बच्चा पैदा होने लगता तब उभय मुखी गौके दानका विशेष फल बताकर बच्चेके पैर बाहर निकले हुए और आधा पेटमें इसतरह उस गौको हरएक घाटपर यात्रियोंसे उसका दान करानेके वास्ते दिन भर लिये फिरते थे और बच्चेको नहीं निकलने देते थे। इस व्यवहारसे गौ माताको अत्यन्त कष्ट होता देखकर रामसिंहजी ने सरकार अंगरेजीसे लिखा पढ़ीकी और इस कुरीतिको बिलकुल बन्द करा दिया ।

इन्होंने अपने राज्यकालमें बहुतसे उत्तम कार्य किये। राज्यमें जो कुरीतियां चली आरही थीं सो सब उठादीं और कितनीही नई लोकोपकारकी बातें जारी कीं ।

इनके राज्यके प्रारंभमें जो दान दी हुई भूमि किसी प्रकारसे सरकारमें जब्त होगई थी सो सनद और दफतरके लेख देखकर सब उनके अधिकारियोंको देदी और बहुतसे निराश्रय लावारिस दीनोंके पालनेका प्रबंध किया। उत्तम पण्डितोंको रखकर कितने ग्रन्थ और ज्योतिषमें खगोल विद्याके अच्छे अच्छे यंत्र और वंश भास्कर आदि ग्रंथ बनवाये। अपनी प्राचीन संस्कृत विद्या पर इनकी विशेष रुचि और श्रद्धा थी। संस्कृत विद्याका आपको उत्तम बोध था। आपका अधिक समय पण्डितोंके सत्संग मेंही कटता था। बाहरसे जो विद्वान आते थे उनका उनकी योग्यतानुसार अच्छा सत्कार करते थे। यह रीति अबतक जारी है और आषाढ़ी पूर्णिमा पर अपने काशीके राजमन्दिरमें पण्डितसभा होनेका भी प्रबन्ध बांधा था जो बदस्तूर जारी है ।

संवत् १९४५के चैत्र कृष्ण १२ को रामसिंहजीने ६८ वर्ष धर्म पूर्वक राज्य करके ७८ वर्षकी अवस्थामें २० वर्षकी अवस्थावाले अपने ज्येष्ठ पुत्र श्रीरघुवीरसिंहजीको राज्यका अधिकारी छोड़कर संसार त्याग दिया। उनकी गंभीर और सरल कविताका नमूना नीचे लिखा जाता है।

श्लोक—दृष्टे कात्यङ्गुतावल्ली सच्चिदानन्द दायिनी।
पत्नागमनवेलायां ददातिफल मुत्तमम् ॥१॥
श्रीभूनीलायुतंशम्भद्रङ्गे ग्रम्भावयास्यहम्।
योऽन्त: प्रविश्यभूतानां धारयत्यखिलंजगत् ॥२॥
श्रीकण्ठसततन्नोमि बुद्धिज्ञान प्रदायकम्।
कलत्रापत्यसहितं सनकाद्यैरभिष्टुतम् ॥३॥
ब्रह्मैवाभातिसर्वत्र नान्योस्तीहसदात्मक:।
मायाकृतमिदंज्ञात्वा विशोकस्सततम्भव ॥४॥

महाराव राजा रामसिंहजीका मेरे ऊपर बड़ा अनुग्रह था। मैंने फारसी किताब "तौकीआत किसरा" का उल्था हिन्दीभाषामें "नोशेरवां नीतिसुधा" के नामसे करके उनकी भेंट किया था। उसका परितोषिक आपने मुझको जोधपुरमें जबकि वर्तमान महाराव राजा साहिबका विवाह करनेके वास्ते संवत् १९३९ में पधारे थे प्रसन्नता पूर्वक प्रदान किया था। आपको इतिहासमें भी बड़ा अभ्यास था और मुझसे भी इसविषयकी बातें बहुत पूछा करते थे।

श्रीमान महाराव राजा रघुवीरसिंहजी।

(वर्तमान बूंदी नरेश।)

बूंदीके वर्त्तमान् नरेश श्रीमान् महाराव राजा रघुवीरसिंहजी महोदयका जन्म आश्विन कृ० १ संवत् १९२६ को हुआ और अपने पूज्यपिताके स्वर्गवास होने पर संवत् १९४६ के चैत्र सुदी १२ को २० वर्षके वयमें राज्यासन पर विराजे।

इनके अनुभवी और नीति कुशल पिता राजर्षि महाराव राजा रामसिंहजीने सोलह वर्षके वयमें राज्य प्रबन्धके कामोंमें इनको

प्रवृत्त कर दिया और बहुतसे कामोंका भार इनके ऊपर डालकर आप निरीक्षककी भांति कार्य करने लगे। उस अपक्व अवस्थामें भी इन्होंने गम्भीरता और मर्मज्ञताका पूर्ण परिचय देकर अपने पूज्यपिताको प्रसन्न कर दिया था। कार्यमें अभिज्ञता और पिताके सदुपदेशोंसे इन्होंने अनुभव प्राप्त कर राज्याभिषिक्त होने पर पिता के अनुभवी तथा बुद्धिमान् मेम्बरोंकी एक कौन्सिल बनाई और आप उसमें प्रेसीडेंट हुए।

बड़े नरेशके समयमें लोगोंकी जैसी जीविका और प्रतिष्ठा थी इन्होंने जैसीकी तैसी बना रखी है। पंचोले विषयोंमें इनकी मर्मज्ञता देखकर बड़े अनुभवी मंत्रियोंकी भी बुद्धि चकित होजाती है। यह गम्भीरता और क्षमाकी तो मानो मूर्त्ति हैं। स्वभावके बड़े कोमल और प्रकृतिके बड़े सरल हैं।

इनके पिताजीने पण्डितोंके सत्कार अनाथ पालन आदिका जैसा प्रबन्ध किया था उसे यह उसी तरह पालन कर रहे हैं।

बूंदी राज्यमें सड़कें ठीक ठीक न होनेसे यात्रियोंको कष्ट होता था। इन्होंने सड़क बनवा कर उन्हें सुख दिया। चोरी और डकैतीके प्रबन्धके लिये मुख्य मुख्य ग्रामोंमें थाने नियत किये। अङ्गरेजी स्कूल मिडिलसे इंट्रेंस तक कर दिया। अपने राज्य और आस पासके गांवोंमें उत्पन्न होनेवाली रूईको पक्की गांठें बांधनेके लिये बावड़ी नामक ग्राममें काटनप्रेस स्थापित किया। हीरक-ज्युबिलीके उपलक्ष्यमें राज्यके राजपूत उमरावों और जागीरदारोंके पुत्रोंके लिये नोबल स्कूल स्थापित किया।

भाषा कविता पर आपकी अधिक रुचि है "रंगजी रंगजी सब कहै, रंगजी रंगे न कोय, जो रंगजी जियमें रंगे तो तुरत मोक्ष जिय होय" यह श्रीमान् की रचना है। श्रीरंगनाथजी इस घरानेके इष्ट देव हैं। यह श्रीवैष्णव हैं इसलिये उक्त कविता में "रंगजी" शब्द आया है। स्वर्गवासी महाराजने इन्हें संस्कृत पढ़ाने पर विशेष ध्यान रखा था और कुछ उर्दू का भी अभ्यास कराया था।

अपने दो छोटे भाई महाराज रंगराजसिंहजी और महाराज रघुराजसिंहजी पर इनका पूर्ण स्नेह है। इनकी छोटी बहन जोधपुरके वर्तमान नरेश श्रीमान महाराज सरदारसिंहजीकी पटरानी हैं। इनके चार व्याह हुए थे। पहला और दूसरा जोधपुरके स्वर्गवासी महाराजा यशवन्तसिंहजीकी बहनोंसे तीसरा झाबुआके स्वर्गवासी राजा गोपालसिंहजीकी राजकुमारीसे और चौथा वर्तमान जोधपुरनरेशके पितृव्य स्वर्गवासी महाराज किशोरसिंहजीकी बाईजीसे हुआ है।

सं० १९४६ में इनके महाराजकुमार राघवेन्द्रसिंहजी उत्पन्नहुए थे। थोड़ीही उमरमें इस बालकका देहान्त होगया। महाराज के कुटुम्बी और प्रजाके लोग इस घटनासे बड़े अधीर हुए। पर महाराजने इसे बड़ी धीरतासे सहा और सारे अन्तःपुर तथा प्रजावर्गको ढारस दिया। अब कोई सन्तान नहीं है। इनके छोटे भाई महाराज रघुराजसिंहजीके एक कुमार ईश्वरीसिंहजी हैं। परमेश्वर श्रीमानके एक चिरञ्जीवि उत्तराधिकारी पुत्र प्रदान करे यही हमारी प्रार्थना है।

श्रीमानका वीरोचित कार्य्योंके करनेमें अधिक अनुराग है। आप अबतक ३० से अधिक सिंहोंका आखेट कर चुके हैं।

भारत गवर्नमेण्टने इनको सन् १८८५ में के० सी० आई० ई० और सन् १८९७ में के० सी० एस० आई०की पदवी दी थी। एक बार आप भारतवर्षके भूतपूर्व वाइसराय लार्ड लैंसडौनसे और दूसरी बार लार्ड एलगिनसे अजमेरमें मिले थे। तीसरी दफा कलकत्तेमें लार्ड कर्जनसे मिले।

संवत् १९५६ के अकालमें राजपूतानेके अन्य राज्योंकी तरह बूँदी राज्यमें भी भयानक दुर्भिक्ष दीनोंका भक्षण करनेके लिये मुंह बाये खड़ा था। पर श्रीमानने गवर्नमेण्टकी इच्छानुसार अपने राज्यमें अपनी ओरसे रेल बनवाना आरम्भ किया जिससे अकालके समय प्रजाकी रक्षा हुई। श्रीमानने इस दुर्भिक्षमें भलीभांति प्रजा

का संरक्षण किया इससे सन् १९०१ में गवर्नमेण्टने ऊपर लिखी हुई पदवियोंके सिवा जी० सी० आई० ई० की पदवी दी।

सं० १९५९ में श्रीमान दिल्ली पधारकर राजराजेश्वर श्रीसप्तम एडवर्डके राज्याभिषेकके दरबारमें सुशोभित हुए। वहांसे महाराज रीवां श्रीमानको अपनी राजधानीमें लेगये। वहां माघ सुदी ५ को आपका पांचवां विवाह उक्त महाराजकी बहनसे हुआ।

संवत् १९६१ में रीवांकी बघेलिन महारानीका देहान्त साधारण रोगसे होगया। सौभाग्यवती महारानीकी सारी उत्तर क्रिया श्रीमानने विधिपूर्वक स्वयं की।

श्रीमान बड़े धर्म्मज्ञ उदारचित्त विद्वान और विद्यानुरागी हैं। विद्यार्थियोंकी सहायतामें सदैव तत्पर रहते हैं। आपको संस्कृत और भाषा कविता पढ़नेमें पूरा अभ्यास है। कभी कभी कुछ कविता भी बनाते हैं। उसमेंसे एक दोहा मुझे भी इनायत हुआहै। वह यह है—

रंगजी रंगजी सब कहै, रंगजी रंगे न कोय।
जो रंगजी जियमें रंगे, तुरत मोक्ष जिय होय॥१॥

इस दोहेके साथ बूँदीके कवि चौबे जगन्नाथजीका बनाया हुआ यह कवित्त भी आया था—

अरथ अनूपम सुभाषा भाव भूषित है
चमत्कार सहित अपार जुक्ति जोहा पै।
व्यंग जुत शोभित है माधुरी सुशब्दनकी
झलके महान भक्ति भक्त मन मोहापै।
कहांलों बखानों लघु मुखसों प्रशंसा भूरि
माधुर मनोहर महान सत्य सोहापै।
वारि डारों कविता अनेक कविवृन्दनकी
बूंदी नृपनाथ रघुवीर कृत दोहा पै॥

पहला भाग समाप्त।

॥ श्री: ॥

राजरसनामृतका शुद्धिपत्र।

पृष्ट	पंक्ति	अशु०	शुद्ध
भूमिका	३	फारसी में	फारसी
२	१६	भाषा	भाषा—उल्था
३	२०	देवजी	देवराज
„	२४	काहन	कालण
४	१६-१८	राईंका	राईका
६	१०	उतर	उत्तर
८	१३	लिख	लिखो
९	१६	१९१५	१९१८
११	२५	कुल	कुछ
१२	२५	षसिद्ध	प्रसिद्ध
१३	२०	सुत	उत
१३	२१	करा	करद
१३	२६	माने	मायने
१४	५	अर्थ	यह अर्थ
१४	१०	छातीकूटूं	छातीमें छुरी मारूं
१६	२	५ लाख	५० लाख
१७	२३	गोढवाल	गोढवाड़
१८	२५	घरनाव	घड़नाव
१९	२	राण	राणा
„	३	हैं	हैं कि

पृ०	पं०	अशु०	शुद्ध
१९	५	सती	सतियां
„	२६	ठगले	ठगली
पृ०	पं०	अशु०	शुद्ध
२३	१२	हाट	हाटक
		कसरे	सो रेख
		खरा	रान
		नरावरे	रावरे
२४	३	चच	चक्र
„	„	चकक्रियें	चक्रिये
२६	२०	१६६८	१६७८
२८	१९	खूब	खूब खूब
२९	११	भूमि	भूमिपैं
„	२१	लिखी	लिखत
३४	१०	१५२५	१५१४
३५	२५	कालिज	कालिज अजमेर
३६	२४	तेजसी	जैतसी
३७	१२	दिये	दिया
„	१८	करोड़	किकरोड़
३९	१२	हैं	है
४१	३	उन पच्छियोंसे पूछा,	पूछा
४१	„	उन्होंने कहा,	तो कहा

पृ०	पं०	अशु०	शुद्ध
४१	८	र्धा	धा
४२	१४	सामर थो	सामरथीक
४२	१५	जसा	जसातता
,,	२८	प्रया गतणी	प्रयागतणी
,,	२१	त्रवेली	त्रिवेणी
४३	३	तिमल धूतापामें दिन	तिमलघुतापा में दिन
४३	२२	बारे खालियां	वारेखा-लियां*
४५	२१	महाराणा	महाराजा
,,	२७	पसरवा	पकड़वा
५०	२	दो	दूसरा
,,	२०	राखत	राखन
५३	७	(१)	(५)
,,	२४	रूसमें	रूसके
५४	१८	मध्यप्र	मध्यम
,,	२५	नशीन	नशीनी
५५	८	लड़ेथे	लड़े तो
,,	१५	जब	जबर
५६	२५	बाबाकी	बाबाजीकी
६४	११	अनुक्रममें	अनुक्रमके
६५	१०	पेचारों	पेचांरो
५५	१२	कहूं	काईं कहूं
६७	४	हैं	है
,,	८	इतिहासका	इतिहास का ग्रन्थ

* व्यभिचारिणियां।

पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
६८	११	१८७९	१८७८
६९	८	काटादिक	कोटादिक
७१	१३	में चलेगये	होगये
,,	२७	का	को
७२	१	आसका है	आस का है
७२	४	चित्र	चित्त
,,	६	कैरे	करे
,,	९	नाहिं	नाहि
,,	१०	मोसरी	मोसरि
,,	१७	सो	सो
,,	,,	सभावे	समावे
,,	१८	ध्याय	ध्यान
७३	३	देवनको	देवनके
,,	४	रुख	रुषा
,,	१७	सुदश	सुदेश
,,	२६	कूलन	झूलन
,,	,,	तरे	भरे
७४	८	ऊखल	ऊपल
,,	२०	शेश	शीश
७५	१७	विहवल	विह्वल
,,	२३	जो	यों
,,	२८	हीन	विहीन
,,	,,	बदिरान	बन्दरान
७६	९	चढ़ी	बढ़ी
७७	२	कारन	कानर
,,	५	फखो	पखो
,,	१३	और	ओर

पृ०	पं०	अशु०	शुद्ध
७७	१५	लग्न	लेशहू
,,	१८	मत	मन
,,	२०	बतो	वे तो
७८	७	सुवावत	सुहावत
,,	९	टुक टुक	ढूक ढूक
,,	१२	सिखलवंदी	सिखलांवदी
,,	१३	नन्ददा	नंदनन्दादा
,,	१४	भावंदी	भांवदी
,,	१६	दिलो दी	दिलों दी
,,	,,	सुहावंदी	सुहांवदी
,,	२०	मजब	गजब
,,	,,	जादिया	राजादिया
,,	२३	मीतते उपाय	मीततेंडे-पाय

पृ०	पं०	अशु०	शु०
७८	२५	दशमो	दशमि
७९	२	मन्द	सन्द
,,	८	अरुणा	करुणा
,,	१०	शिवको	शिवके
८०	१२	प्रदन्नम	प्रदमम
,,	१४	गंगाजीको	गंगाजीके
,,	२७	सारन	सोरन
८१	३	झले	झिले
,,	५	कलख	कलरव
,,	८	दरसाति	दरसात
,,	९	मधुरि	माधुरि
८२	१२	चोवन	चोविन
८२	,,	झपये	रिझये
,,	२५	लह्या	गह्यो